ओमशान्ति मीडिया

25 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस पर विशेष..

वर्ष - 27 | अगस्त -2025 | अंक - 09 | माउण्ट आबू | Rs.-20

116 बेटियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के संकल्प के साथ विश्व परिवर्तन के कार्य में किया अपना जीवन समर्पित

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। 116 बेटियां अध्यात्म की राह पर चलते हुए शिवप्रिया बन गईं। शिवलिंग को वरमाला पहनाकर परमात्मा शिवबाबा को अपना जीवन साथी बनाया और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प लिया। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शान्तिवन में आयोजित अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह में देशभर से उच्च शिक्षित बीए, एमए, एमकॉम, डॉक्टरेट बेटियों ने अपने माता-पिता और परिजन के सामने संयम पथ पर चलने और ईश्वरीय सेवा का संकल्प लिया। इस महा समर्पण के पांच हजार से अधिक लोग साक्षी बने। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि धन्य हैं वह माता-पिता जिन्होंने अपनी लाडलियों को ईश्वरीय सेवा में अर्पित किया है। आप सभी जिस भी सेवाकेन्द्र पर रहें, वहाँ खुश रहें, प्रसन्न रहें और परमात्मा का नाम रोशन करें। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि युवावस्था में संयम का मार्ग अपनाना अपने आप में प्रेरक और महान कार्य है।

परमात्मा को साक्षी मानकर पांच हजार लोगों की मौजूदगी में 116 बेटियों ने लिया संयम पथ पर चलने का संकल्प। अलौकिक दिव्य समारोह में मंचासीन सभी बेटियों ने शिवलिंग को वरमाला पहनाकर बनाया अपना जीवनसाथी।

इन्होंने भगवान को जमाई बना लिया:-

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि आप सभी माता-पिता बहुत भाग्यशाली हैं जो भगवान को ही जमाई बना लिया। अपनी कन्या के लिए सबसे अच्छा घर और वर ढूंढा है। आप कितने भाग्यशाली हैं कि आपकी बेटी जो कभी विधवा नहीं होगी, वह सदा सुहागिन रहेगी। इन बेटियों का परम सौभाग्य है कि इन्होंने अपना जीवन ही परमात्मा की सेवा में लगा दिया।

एक दिन इन बेटियों का राज याद रहेगा:-

अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि आज जिन कुमारियों का समर्पण हो रहा है उन्हें जन्म देकर संस्कारित करने वाले माता-पिता धन्य हैं। इन कन्याओं को इस लायक बनाया है कि वह ब्रह्माकुमारी बन सकीं, इनकी टीचर्स ब्रह्माकुमारी बहनों का भी बड़ा त्याग है। मीडिया विंग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन ब्र.कु. शारदा दीदी ने किया। मधुर वाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दे भाव विभोर कर दिया। डॉ. दामिनी,अहमदाबाद ने अपनी मधुर आवाज से समारोह में समां बांध दिया। राजकोट से आये कलाकारों के दल ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी।

वरिष्ठ दादी-दीदियों ने सभी को एक-एक संकल्प पत्र दिए और यह तीन संकल्प कराए

▷ **पहला:-** मैं आज से मन-वचन-कर्म से परमात्मा को अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर रही हूं। आज मैं परमात्मा शिव को साजन, पति के रूप में स्वीकार करती हूं। मैं यह निर्णय अपनी स्वेच्छा से ले रही हूं जिसका मैं अंतिम श्वास तक पालन करूंगी।

▷ **दूसरा:-** मैं सदा इस ईश्वरीय यज्ञ के बनाए गए नियम-मर्यादा में रहकर चलूंगी, सेवा करूंगी और सदा अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ज्ञान-योग-साधना को अपने जीवन का लक्ष्य बनाऊंगी। जिस लक्ष्य पर चलकर अपने जीवन को देवतुल्य बनाऊंगी।

▷ **तीसरा:-** इस ईश्वरीय यज्ञ, परिवार की वरिष्ठ दीदियां ईश्वरीय सेवा में जहां रखेंगे, सेवा के लिए कहेंगी वहां खुशी-खुशी सेवा के लिए तैयार रहूंगी। विपरीत परिस्थिति में भी खुश रहते हुए सेवा के लिए हर बात में हाँ जी का पाठ पक्का करूंगी। भगवान के घर से जो खाने और पीने को मिलेगा उसमें सदा खुश-राजी रहूंगी। सदा हाँ जी का पाठ पक्का करते हुए सभी की दुआएं प्राप्त करूंगी।

समर्पण कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा, ज्ञानामृत पत्रिका के संपादक राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश तथा अन्य।

महान व्यक्ति वो जो अपनी भीतरी परिवर्तन को हमेशा आगे रखता

(राजयोगी ब्र.कु. कैलाश भाई)

हमने हर पल उसे निहारा, देखा कि कैसे उस महान आत्मा ने अपना जीवन जिया। मुझे भी सेवा हेतु उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। जब इस ईश्वरीय यज्ञ का सबसे पहले और विशाल प्रोजेक्ट ज्ञानसरोवर का निर्माण करना तय हुआ तब दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे कहा कि आपको इस कार्य को देखना है। मैंने बिना कुछ सोचे-समझे हाँ कर दी। जबकि मुझे कंस्ट्रक्शन के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान नहीं था।

हमने देखा, उस समयकाल में यज्ञ का सबसे विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण करना था तो सबकुछ चाहिए। लेकिन दादी ने बाबा के निर्देशानुसार सेवाओं के विस्तार को देखते हुए तय किया कि करना ही है।

दादी ने कुछ भी नहीं सोचा कैसे होगा, कब तैयार होगा? बस, बाबा का कहना और दादी जी का करना। दादी और बाबा के दिल का तार इतना जुड़ा हुआ था जैसे कि मोबाइल फोन करते ही हम बात करने लगते हैं।

दादी की बिना तार की बातचीत का नेटवर्क अटूट था, हॉट लाइन थी। दादी जी ने बाबा से हुई रूहरिहान क्लास में बताई कि बाबा के दो लाख बच्चे हैं तो हम सभी एक-एक रुपया रोज़ निर्माण के कार्य की भण्डारी में डालें तो कार्य हुआ ही पड़ा है।

दादी जी हमेशा मधुबन में रहने वाले सभी वरिष्ठ भाई-बहनों के सामने विचार रखती थीं और सबसे राय करके ही कोई भी कार्य करती थीं। ये उनके कार्य करने का तरीका बड़ा ही निराला था। दादी जी का सबके प्रति इतना रिगार्ड और रिसपेक्ट था, उतना ही सर्व ब्रह्मावत्सों का भी दादी जी के प्रति था। इसलिए, दादी जी भी कहतीं वो हर एक ये समझता कि मेरा सौभाग्य है। तो इसी उमंग-उत्साह में हाँ जी कर सभी तन्मयता से जुट जाते थे। सबकी विशेषताओं की अंगुली लगने से विशाल कार्य का पर्वत समय पर ही सम्पन्न हो गया।

दादी जी, ज्ञान का मर्म बड़ी सरलता और सहजता से बताती जो सामान्य से सामान्य जिज्ञासु के दिल पर छप जाता और उनके दिल में उमंग-उत्साह का संचार हो जाता। वे उसे पूरा करने में अपने तन, मन, धन, समय, श्वास, शक्ति से लग जाता। दादी का विशाल हृदय वह सबके प्रति कल्याणमयी भावना के कारण हरेक की कमज़ोरी के संस्कार को कमाल में परिवर्तन कर देता। यही कारण रहा कि मुझे कुछ भी प्रोजेक्ट के सम्बन्ध में न ही ज्ञान था और न ही समझ थी फिर भी इतना बड़ा कार्य खेल-खेल में कैसे पूरा हो गया। जब आज मैं सोचता हूँ तो दादी जी का वो स्नेह नैनों से झलक आता है। दादी जी कभी भी कार्य का श्रेय अपने आप को नहीं देतीं। हमेशा कहतीं बाबा का कार्य है, करनकरावनहार बाबा है, हमें तो सिर्फ निमित्त बन करना है। जब कार्य ही उनका तो यश और कीर्ति भी उनकी ही होंगे ना!

मुझे याद है कि जब किसी ने कहा कि दादी, फलाने की ये आदत मुझे पसंद नहीं है, तो दादी ने कहा कि वो बात तो ठीक है, लेकिन उसकी आदत ठीक न हो और उसकी आदत के अनुरूप हमारी भावनाएं बदल जाती हों तो हम भी ज्ञानी तो नहीं ठहरे ना! यानी कि उनकी आदत का प्रभाव हमारे पर अगर पड़ता है तो हम उसे कैसे सुधार सकेंगे! हमें तो यह चेक करना है कि मेरे जीवन में भी ये आदतें तो नहीं हैं, उसे चेक कर बदलना है। किसी को बदलने में मेरे संस्कार रुकावट तो पैदा नहीं करते हैं! इसी के लिए तो हमें ज्ञान की शक्ति चाहिए।

हमने दादी को हमेशा बाप समान बनकर कर्म करते हुए देखा। उनके जीवन में हमने एक उत्तम ब्राह्मण की छवि देखी। वे हमेशा कहतीं कि **हम ब्राह्मणों का आचरण ही है सबका सुनना, सबका समाना, सबका सहन करना और सबको स्नेह देना।** सबको सहन कराना, ये हमारा आचरण नहीं है। सहन करना सीखो, सहन कराना नहीं। यह दादी के जीवन के इस मंत्र को हमने प्रत्यक्ष रूप में देखा। एक बार की बात है, दादी जी को सभी मिलते थे। एक भाई दादी के पास आकर बहुत ज़ोर-ज़ोर से बोलकर अपनी बात कहकर बाहर चला गया। उसके बाद मुझे दादी से मिलना था। जैसे ही मैं दादी जी के कक्ष में मिलने गया, दादी एकदम शांत और सौम्यता के साथ बैठी थीं जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं हो। दादी ने प्यार से मेरी बात सुनी और उसका समाधान भी किया। मैं वापस चला गया। पर मेरे मन में वो बात सारे दिन चलती रही कि वो पहले वाला भाई जो ऊंचे आवाज़ में दादी को कहकर गया। लेकिन दूसरे दिन भी जब मैं दादी के पास कारोबार अर्थ गया तो दादी वैसी ही शांत और सौम्यता की मुद्रा में थीं। मुझे मन ही मन में उत्तर मिल गया कि महान व्यक्ति के लक्षण क्या होते हैं। दादी किसी की कैसी भी बात अपने दिल में नहीं रखती थी। दादी हमेशा कहती थीं कि या तो बातें अपने दिल में रख सकती हूँ, या बाबा को, क्योंकि दिल तो एक ही है ना! ये हमने दादी के जीवन से हरपल अनुभव किया।

दूसरों के कल्याण के साथ-साथ स्व-उन्नति का ख्याल उनके जीवन से झलकता था। जो बाबा ने कहा, वही मुझे करना है, ये दादी के जीवन का महामंत्र रहा। दादी हमेशा कहती थीं कि कर्मातीत स्थिति का अनुभव अंत में थोड़े ही कर सकेंगे। अंत में तो उड़ ही जायेंगे। क्या उड़ने के बाद उस अनुभव का वर्णन करेंगे। कर्मातीत अवस्था का आनंद अगर शरीर छोड़ने समय अनुभव में आएगा तो उसका वर्णन कब और कैसे करेंगे? कोई पूछे, इस स्थिति का अनुभव क्या है? तो क्या हम उसको ये कहें कि जब शरीर छोड़ूं तब कहना। मैं सदा उसी लक्ष्य पर रहूँ जैसे आज ही कर्मातीत हूँ, कल नहीं होऊंगी। उड़ने के बाद तो मैं सुनाऊंगी ही नहीं कि मैं कितनी ऊंची स्थिति में हूँ। इससे अच्छा तो मैं वो फल अभी खाऊं। इसके लिए मैं आत्मा इतनी सम्पन्न रहूँ जो सर्व सम्बन्धों, सर्व गुणों, सर्व कलाओं का फल रोज़ खाऊं। हमें तो इस स्थिति में बहुत मज़ा आता है। महान व्यक्ति अपने भीतरी परिवर्तन को हमेशा प्रथम रखता है और अपने जीवन से दूसरों को प्रशिक्षित करता है, ये हमने दादी में देखा। ऐसी दादी जी को विनम्रता से भावपूर्ण पुष्पांजलि अर्पित।

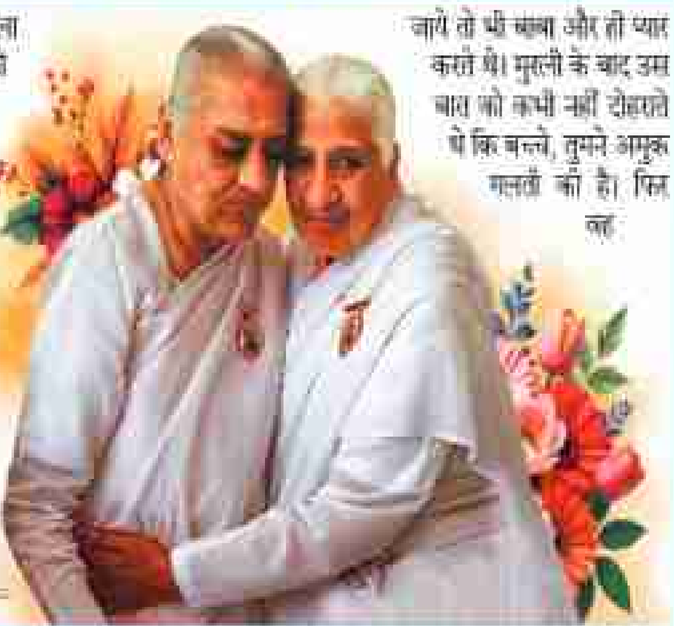

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

साकार बाबा का प्रतिरूप बन दादी ने सबको दिया भरपूर प्रेम...

बाबा हर बच्चे को बहुत प्यार करते थे। गलती करने वाला भी बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। मुरली क्लास के अलावा बाबा किसी को भी किसी गलती के बारे में कुछ नहीं बोलते थे। उसी प्रकार दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली बहुत ध्यान से सुन रहा है या नहीं। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि भी ये ज्ञान-मोतों का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा भी इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएं सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धु सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षाएं भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे, मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चेम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट से जाते थे और हम सभी बच्चे पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चेम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की कोई बात नहीं रखती थीं। ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

दादी जी बाबा के निर्देशों को बड़ी तपस्या से अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

दादी प्रकाशमणी को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता सम्पन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुंज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबको भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थीं। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में भी हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं। वे सरलता और स्नेह की मूरत बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारी मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आये तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियां बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प, बोल में नहीं देखा।

सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया। प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणी) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियां दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अमेरिका, कनाडा, कैरेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था। उन दिनों पूरे 4 साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियां पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा किया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारम्भ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

हबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अन्तिम जन्म में ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी।

आध्यात्मिक चेतना की दैवी मशाल - दादी

अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने यह सिद्ध किया कि नारी शक्तिस्वरूपा है। नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाए तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है।

दिव्यता की मूर्ति दादी प्रकाशमणि का जन्म सन् 1 जून 1922 में हैदराबाद सिन्ध(पाकिस्तान) में हुआ। वह बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थीं। सन् 1937 में विश्व के सृजनहार परमपिता परमात्मा शिव ने हीरे जवाहरात के प्रतिष्ठित व्यापारी दादा लेखराज को परमात्म स्वरूप एवं भावी नयी सतयुगी दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया। 'प्रजापिता ब्रह्मा' के दिव्य नाम से जाने जाते उन्हीं दादा ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री रमा 14 वर्ष की तरुण आयु में, इस संस्था के संस्थापक के सम्पर्क में आईं। उसे भी अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए, जिसमें उन्होंने ज्योति स्वरूप शिव एवं नयी सतयुगी दुनिया देखी। उन्हें वर्तमान विश्व, प्रकृति के प्रकोप, अणु शक्ति, गृह युद्ध आदि द्वारा परिवर्तन होने का भी दृश्य दिखाई दिया। रमा के दूरदर्शी एवं भविष्यवक्ता लौकिक पिता को अपनी सुपुत्री के भावी जीवन के संकेत प्रारंभ से ही मिल गये थे। उन्हीं के अनुरूप वही रमा आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति कर प्रकाशमणि कहलाईं।

आदर्श ब्रह्माकुमारी और संस्था की स्थापना स्तम्भ

रत्नप्रभा दादी जी ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान को आध्यात्मिक क्रान्ति में अपने आपको प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारीज संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनीं। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने प्रकाशमणि, अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर, अपना सब कुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि, इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में स्वयं को एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाशस्तम्भ बन कर उभरीं।

ब्रह्माबाबा ने ईश्वरीय सेवा हेतु भेजा

दादी की दिव्य बुद्धि, कर्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। इनके सद्प्रयास से दिल्ली, अमृतसर, कानपुर, मुम्बई, कोलकाता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। पांच वर्ष तक मुम्बई राजयोग केन्द्र की निर्देशिका के रूप में सैकड़ों कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए। 1964 में इन्हें महाराष्ट्र ज़ोन की संचालिका और उसके बाद 1968 तक महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक ज़ोन की प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

स्वयं ब्रह्माबाबा ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की बागडोर सौंपी

सन् 1969 में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान के पूर्व संध्या पर दादी के अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए,

अपना हाथ दादी जी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्वशक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी। तब से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक वह संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्य करती रहीं।

विश्व में भारतीय संस्कृति सभ्यता के प्रति प्रेरित किया

अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को लेकर, उच्च जीवन प्रणाली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्व विद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी तीव्र हुई, जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेशों में आठ हजार ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक सेवाकेन्द्र स्थापित हुए और हजारों भाई-बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित किया।

संस्थान को संयुक्त राष्ट्र संघ ने मान्यता दी

दादीजी के नेतृत्व में, समाज में शांति, सद्भावना, धार्मिक समरसता, भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की तथा यूनिसेफ से भी जोड़ा। दादीजी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' और दादीजी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शान्ति दूत सम्मान' से भी अभिनंदित किया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी शान्तिदूत पुरस्कार प्रदान किए। इसके अलावा, दादी जी को अनेक महामण्डलेश्वरों, सामाजिक संस्थानों, राज्य सरकार ने विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान चिन्ह भेंट करते हुए उनकी सेवाओं की स्तुति की।

मानद उपाधि से नवाजा

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए, दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर,1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी ने 'डाक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें 'अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार-1994' भेंट किया।

आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत

दूरदृष्टा दादीजी ने राजयोग शिक्षा एवं शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सोलह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद, युवा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक, प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अन्तर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बंधुत्व के बोध को जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं। ज्ञान-योग की तर्क संगत वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुति बुद्धिजीवियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। दादीजी विभिन्न जाति, वर्ग, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बनीं।

विश्व धर्म संसद ने अध्यक्षा के रूप में मनोनीत किया

शिकागो में 'विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर, आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादीजी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गईं, उस समय वाशिंगटन डी.सी. में स्टेट कैपिटल बिल्डिंग के सामने मेयर ने दादी जी के करकमलों से वृक्षारोपण कर 'ओमशान्ति ट्री' नामांकित किया, साथ ही प्रतिवर्ष 10 जून को 'प्रकाशमणि दिवस' मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् कायम है।

आध्यात्मिक मूल्य जागृति हेतु यूनेस्को ने विशेष सम्मानित किया

यूनेस्को ने दादीजी को अंतर्राष्ट्रीय शान्ति संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष अवॉर्ड से सम्मानित किया। शान्ति एवं सद्भाव के संचार के लिए दादीजी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय धर्मसम्मेलन का आयोजन शान्तिवन में विभिन्न तीर्थ स्थलों से निकाली गई यात्राओं के समापन पर किया गया।

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादीजी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी व्यक्तित्व से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। इनके सानिध्य में लाखों परिवार पवित्र, तनाव एवं व्यसनों से मुक्त, सुखी जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी को शत्-शत् नमन।

पणजी-गोवा। गोवा के महामहिम राज्यपाल पी.एस. श्रीधरन पिल्लई से राजभवन में स्नेह मुलाकात के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, ब्र.कु. शोभा,गोवा इकाई तथा अन्य भाई-बहनें।

बैतूल-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के गंजनगर स्थित आनंद सरोवर में इस वर्ष की थीम 'एक पेड़ माँ के नाम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करते हुए विधायक हेमंत खंडेलवाल। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. सुनीता, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद, डॉ. जगदीश घोरे,मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. मनीषा लाम्बरे,हृदय रोग विशेषज्ञ, डॉ. कृष्णा मौसिक,नर्स रोग विशेषज्ञ, डॉ. विनय चौहान, डॉ. जगदीप पेंडारी,नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं श्रीमती पुष्पलता सावरे,डायरेक्टर ज्ञानदीप स्कूल।

मेहसाणा-गुज.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज मेहसाणा के गोल्डन पैलेस में इस वर्ष की 'एक पेड़ माँ के नाम' थीम पर आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. पारुल, पूर्व जिला वन अधिकारी भोगी एन. पटेल, मेहसाणा के रेन्ज फॉरेस्ट ऑफिसर नियाज खान तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण का सन्देश देने व सभी को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयंती, ब्र.कु. सुजाता, फिजियोथेरेपी एंड स्किल सेंटर डायरेक्टर डॉ. मयूरी सराफ, पाईनो हॉस्पिटल डायरेक्टर डॉ. सीमा जैन, पत्रकार अंजना साहू एवं वार्ड क्रमांक 3 पार्षद शिल्पा दुबे।

ग्वालियर-म.प्र.। स्वयंसेवक संघ के महिला कार्यकर्ताओं के द्वारा आयोजित भारत माता की आरती के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित हैं आमंत्रित स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, डॉ. प्रोफेसर नमिता जैन, राजगढ़ जिले की किन्नर समाज की गुरु माता रानी नायक, महिला समन्वय की विभाग प्रमुख तृप्ति शर्मा तथा अन्य।

थाने वेस्ट-शिवाजी नगर(महा.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सावरकर नगर में आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करने के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. ज्योत्स्ना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मन को समझ गए तो उसे चलाना आसान हो जाएगा...

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

ये तो हम सभी जानते हैं कि हमें पॉज़िटिव थिंकिंग करनी चाहिए। जागृति हरेक के अन्दर है। परन्तु ये पॉज़िटिव थिंकिंग कौन करता है? कहाँ से होती है? और अगर पॉज़िटिव थिंकिंग नहीं चलती है तो उसका कारण क्या है? उसको खत्म करने की विधि क्या है?

आत्मा की तीन शक्तियां हैं- मन, बुद्धि और संस्कार। ये तीनों आत्मा के साथ ही शरीर में प्रवेश होती हैं और तीनों आत्मा के साथ ही इस शरीर से चली जाती हैं। मन क्या चीज़ है, मन है आत्मा की संकल्प शक्ति का दूसरा नाम, जो आध्यात्मिक शक्ति है हम सबके भीतर, जिसको आत्मा कहा। उसका स्थान है और उसका कार्य है विचार चलाना। जितने भी विचार चलाते हैं, मन के अन्दर ही चलते हैं और उन विचारों के आधार पर ही हमारी मानसिक स्थिति बनती है। मन के और भी कर्तव्य हैं, खाली सोचना नहीं है। हमारे भीतर जो भी फीलिंग्स आती हैं, महसूस जो भी हम कर सकते हैं, एक-एक विचारों को चाहे वो अच्छे विचार हों, चाहे बुरे विचार हों, वो महसूस भी मन करता है। किन्हीं को क्रियेट करना, जो रचनात्मकता है वो भी मन के अन्दर समाई हुई है। मन काफी कुछ इमेजिन भी कर सकता है, रचनात्मकता के साथ-साथ बहुत कुछ देख सकता है और उसके अन्दर इच्छा शक्ति समाई हुई है। जब भी मन के अन्दर इच्छा उत्पन्न होती है कि ये करें या ना करें, तो ये इच्छा शक्ति भी मन के पास ही है। स्मृति जो है वो भी हमारे मन के अन्दर ही है। जो याददाश्त है, कई बातों के जो पूर्व अनुभव हैं, उन अनुभवों को जब याद करने का प्रयत्न करते हैं, ये याद करने की भी मन की शक्ति है। और साथ ही साथ

> मन का सिर्फ सोचने का ही कार्य नहीं है लेकिन सोचने के साथ-साथ कुछ क्रियाएं भी मन की शक्ति की हैं, इसीलिए मन एक बहुत महत्त्वपूर्ण आत्मा का अंग कहो या आत्मा की सूक्ष्म शक्ति कहो। मन के ऊपर ही सबकुछ निर्भर करता है।

अनुभव करने की शक्ति भी मन के पास है। तो खाली मन का सोचने का ही कार्य नहीं है लेकिन सोचने के साथ-साथ कुछ क्रियाएं भी मन की शक्ति की है इसीलिए मन एक बहुत महत्त्वपूर्ण आत्मा का अंग कहो या आत्मा की सूक्ष्म शक्ति कहो। मन के ऊपर ही सबकुछ निर्भर करता है। तभी श्रीमद्भगवद् गीता में भी यही कहा कि आत्मा का शत्रु और मित्र अगर है तो वो मन है। जब मन मित्र बन जाता है तो मन अच्छे से अच्छे अनुभव करा देता है लेकिन जब वो नकारात्मक चिन्तन करके अपना शत्रु बन जाता है तब भी हम अपने आप में बहुत हीनता की भावना को महसूस करते हैं। जीवन में कभी-कभी डिप्रेस्ड हो जाते हैं, वो भी उसी कारण से। तो इसीलिए मन को मित्र बनाने की कला जिसको मॉडर्न लैंग्वेज में कहा आर्ट ऑफ पॉज़िटिव थिंकिंग। सकारात्मक विचार करेंगे तो ज़रूर मन अपना मित्र बन जाएगा। वो मन एक तूफानी घोड़े के रूप में दर्शाया है। कई प्रकार की उपमाएं मन के लिए दी गई हैं। किसी ने कहा मन चंचल है, एक बन्दर के जैसा है। किसी ने कहा मन तूफानी घोड़े जैसा है, जिसको कन्ट्रोल करना बहुत मुश्किल है। किसी ने कहा एक तूफानी बच्चे जैसा है, चंचलता करता रहता है। ऐसी अनेक प्रकार की उपमाएं मन को दी गई हैं। लेकिन आज हम आपको एक बात बताते हैं कि मन बहुत सुन्दर चीज़ है। मन ना तो तूफानी घोड़ा है, ना तो चंचल बच्चा है और ना ही एक चंचल बन्दर है, जो उछल-कूद करता रहता है। अब वो उछल-कूद करता है, तूफान मचाता है वो इसलिए क्योंकि हमने मन को समझा नहीं है। जिस दिन हम मन को समझ जायें, उसकी शक्ति को समझ जायें, उसकी क्षमता को समझ जायें उसके बाद उस मन को चलाना आसान हो जाता है। सिर्फ उसको क्या चाहिए, ये समझ लेना चाहिए। जैसे एक तूफानी बच्चा है, खूब चंचलता करता है, तूफान मचाता है, पड़ोसी उसको दस चीजें देता है तो भी वो मानता नहीं और भी चीजें उठा-उठाकर फेंकता है। लेकिन जब उसकी माँ आती है तो उसको पता है कि इस बच्चे को इस वक्त क्या चाहिए। ये क्यों तूफान मचा रहा है, उसको वही चीज़ उठाकर दे देती है, उसकी चंचलता समाप्त हो जाती है और बच्चा शांत हो जाता है। क्योंकि माँ ने बच्चे की साइकोलॉजी को समझा है। इसलिए उसको वही चीज़ मिल जाने से वो शांत हो जाता है। मन सुमन बन जाता है, श्रेष्ठ बन जाता है। इसलिए हमें पहले अपने मन को समझना होगा कि वास्तव में उसे चाहिए क्या! जब ये समझ जायेंगे तो उसको चलाना आसान हो जायेगा।

औरंगाबाद-महा.। एयरपोर्ट सीआईएसएफ के जवानों के लिए 'प्रेरणा, ध्यान और तनाव मुक्त जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. दीपा तथा सीआईएसएफ के जवान।

इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर इस वर्ष की थीम 'एक पेड़ माँ के नाम' पर आयोजित कार्यक्रम में समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. पद्मनी,बिलासपुर, ब्र.कु. शारदा,इंदौर बैराठी कॉलोनी, प्रेम जोशी,वरिष्ठ पर्यावरण विद्, अशोक मेहता,समाजसेवी एवं पर्यावरणविद्, वैशाली मालवीय,महिला प्रमुख,भारतीय किसान संघ।

जगदलपुर-छ.ग.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के पावन धाम वृंदावन कॉलोनी में आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए बस्तर संभाग की प्रभारी ब्र.कु. मंजूषा। मंचासीन हैं रोटरी क्लब अध्यक्ष सोए, किनेक सानी तथा अन्य।

रतलाम-गौरव फैमेस कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के गायत्री भवन के तृतीय वार्षिकोत्सव पर 'विश्व एकता एवं विश्वास के लिए ध्यान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनीषा, ब्र.कु. प्रकाश, नगर निगम के विशाल शर्मा,एमआईसी सदस्य,स्वास्थ्य एवं ठोस अपशिष्ट प्रभारी, राजीव उबी,अभिभावक संघ अध्यक्ष, सतीश तिवारी,प्रधानाचार्य बधिर एवं मंदबुद्धि विद्यालय, लोकेंद्र सिंह गहलोत,सचिव अभिभावक संघ, राजेंद्र प्रसाद शर्मा,रिटायर्ड इंचार्ज लैबोरेटरी जी.एम. रतलाम तथा अन्य।

खुद से खुद का रिश्ता जोड़ें...

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जब बाहर की दुनिया की बात आती है तो हमें सबकुछ पता रहता है। सिर्फ अपने मन में क्या चल रहा है, यही हमें नहीं पता होता है। हम एक बटन से सबकुछ कंट्रोल कर सकते हैं, लेकिन कितना भी कोशिश करो मन को चुप नहीं करा पाते हैं। ऐसा क्यों हुआ कि बाहर सबकुछ हमारे कंट्रोल में है और जो अपना है वो ही अपने कंट्रोल में नहीं है?

दो प्रकार के शोर होते हैं। एक शोर होता है बाहर और दूसरा शोर होता है हमारे अंदर। जब बाहर शोर होता है तो इन कानों से कुछ सुनाई नहीं देता। जब अंदर शोर होता है तो सुनाई देता है लेकिन समझ नहीं आता। बाहर का शोर हमारे हाथ में नहीं है लेकिन अंदर मन की स्थिति कैसी रहे, यह पूरी तरह हमारे हाथ में है। हम एक ऐसे युग से गुज़र रहे हैं, जहाँ लोगों को लगता है कि मन को कंट्रोल करना तो असंभव है। क्योंकि हमने अपने मन का कंट्रोल औरों को दिया हुआ है।

आज के दिन को चेक करें। चाहे थोड़ा-थोड़ा सा डिस्टर्ब हुए, कुछ बुरा लगा, थोड़ी-सी चिंता हुई, नाराजगी आई, थोड़ा-भी मन हिला, हलचल में आया तो उस क्षण मैंने उस हलचल का ज़िम्मेदार किसको ठहराया? मैं डिस्टर्ब हुआ किसकी वजह से? हमारी अंगुली किसकी ओर मुड़ती है? मेरा मन शांत हो जाए, स्थिर हो जाए, उसके लिए भी हम अंगुली दूसरों पर रखते हैं कि आप बदलो तो मैं ठीक हो पाऊंगा। क्योंकि बहुत समय से हम इसी तरह से चल रहे हैं, तो मन शांत होने के बजाए शोर बढ़ता जा रहा है। शोर मतलब मन ज्यादा सोचता है। सोचना बंद ही नहीं करता है। मन जब ज्यादा सोचता है तो थक जाता है। उसका असर शरीर पर भी पड़ता है। आज किसको कहा जाएगा कि वो भाग्यशाली है? जिसका तन, मन, सम्बन्ध और धन सही हो। जीवन जीने के लिए तो चार ही चीजें चाहिए, लेकिन उस सब की शुरुआत मन से होती है। सबसे ज़रूरी चीज़ आज पक्का करते हैं जीवन भर के लिए कि जब कोई दूसरे शहर से आता है तो आते ही वातावरण में वो चेंज पता चलता है। वो सात्विकता, वो सादगी, वो प्यार, वो अपनापन, वो सिर्फ मन में नहीं रहता, वो फैल जाता है वातावरण के अंदर। क्योंकि संकल्प से सृष्टि बनती है।

जैसे हम विद्या अर्थात् पढ़ाई को कहते हैं तो पढ़ाई किस चीज़ की? आज दुनिया ज़्यादातर फोकस करती है बाहर की दुनिया की पढ़ाई पर। जब बाहर की दुनिया की बात आती है तो हमें सबकुछ पता रहता है। सिर्फ अपने मन में क्या चल रहा है, यही हमें नहीं पता होता है। हम एक बटन से सबकुछ कंट्रोल कर सकते हैं, लेकिन कितना भी कोशिश करो मन को चुप नहीं करा पाते हैं। ऐसा क्यों हुआ कि बाहर सबकुछ हमारे कंट्रोल में है और जो अपना है वो ही अपने कंट्रोल में नहीं है? उसका कारण सिर्फ एक है कि बाहर मेहनत की तो सबकुछ पा लिया, थोड़ा-सा मन पर परिश्रम करेंगे तो यहां भी पा लेंगे। ज़्यादा आसान क्या है- बाहर की दुनिया को संभाले या अपने मन को?

अगर आप अपने मन को कहें कि ऐसा नहीं सोचना तो क्या वो आपका कहना मानता है? हमें ऐसा मन चाहिए, जो हमेशा हमारी बात माने। आप देखो दूसरों का मन तो हमारी बात मानता है। आप किसी को कहें ऐसा करो तो वो तुरंत कर देते हैं। तो कौन सुन रहा है? उनका मन सुन रहा है। उनका मन मान रहा है। हमें कोई कुछ कहे तो भी हम मान लेते हैं। मतलब हम दूसरों का कहना मानते हैं, दूसरे हमारा कहना मानते हैं, सिर्फ हम खुद, खुद का कहना नहीं मानते। क्योंकि खुद के साथ तो कभी बैठकर समय बिताया ही नहीं, रिश्ता बनाया ही नहीं, तो वो रिश्ता निभाएगा क्यों? मेरे मन का रिमोट कंट्रोल दूसरों के पास होगा तो मैं खुद अपने को कैसे शांत कर सकूंगा?

रायपुर-टिकरापारा (छ.ग.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित समर कैंप के समापन समारोह कार्यक्रम में समर कैंप में हुई प्रतियोगिता में विजयी छोटी बहन को पुरस्कार प्रदान करते हुए छत्तीसगढ़ के खेलकूद एवं युवा-कल्याण, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री टंकराम वर्मा। साथ हैं ब्र.कु. सविता, जिला महामंत्री ग्रामीण अनिल अग्रवाल, रायपुर, नगर पालिका तिल्दा नेवरा अध्यक्ष चन्द्रकला वर्मा तथा अन्य।

बड़ोदरा-अलकापुरी (गुज.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर 'एक वृक्ष माँ के नाम' विषय पर आयोजित सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. डॉ. निरंजना, असिस्टेंट म्यु. कमिश्नर सुरेशभाई तुरी, कॉर्पोरेटर शैल आचार्य, नाबार्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट की अंकिता जायसवाल, सी.ए. डॉक्टर उमेश डोंगरकर एवं ब्र.कु. चंदा।

पन्ना-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिज्ञा करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता, अनुपम शर्मा, डीएफओ तथा अन्य भाई-बहनें।

मुंबई-पवई (महा.)। पवई सेवाकेन्द्र एवं आईआईटी बॉम्बे की टीम योगगम के सहयोग से आईआईटी कैंपस में आयोजित 'म्यूज़िकल मेडिटेशन' सेशन के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अल्का, बर्मा, ब्र.कु. रितु ठाकर, योगगम टीम से कार्तिकेय, राजीव, शिवम, कृष्णा तथा अन्य भाई-बहनें।

जशपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति भवन के सभागार में विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण, इंदौर। मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया।

बिजावर-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधा लिए हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति, सब जेल बिजावर के सहायक जेल अधीक्षक मुकेश कुमार मांझी, प्रमुख प्रहरी मोतीलाल चौधरी, नर्स रेनू, प्रहरी धर्मेन्द्र सिंह ठाकुर तथा अन्य।

जबलपुर-नेपियर टाउन (म.प्र.)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर व्यसन मुक्त चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. भूमि, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. अनसूया, ब्र.कु. मोनिका, प्रवेन्द्र यादव, अध्यक्ष नन्दराम संघ ठाकुर, सी.आर.एम.एस., जबलपुर, रौनिकांत, चीफ वाणिज्य रेलवे स्टेशन, रेलवे, वाणिज्य प्रबंधक रेलवे स्टेशन जबलपुर, डॉ. श्याम गुप्ता, डॉ. लखन वैश्य तथा अन्य।

मुंबई-बोरीवली वेस्ट (महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा आयोजित नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत निकाली गई जागरूकता रैली को शिवध्वजा दिखाकर रवाना करते हुए डॉ. शालिनी सिन्हा, डायरेक्टर सेंट फ्रांसिस इंस्टिट्यूट, डॉ. पी.वी. शेट्टी, पूर्व ज्वाइंट सेक्रेटरी, मुम्बई क्रिकेट एसोसिएशन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिन्दु।

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग व शर्मा डेंटल क्लिनिक के संयुक्त तत्वावधान में सिकन्दर कम्पू स्थित पान मिल श्रीकृष्ण कॉलोनी में आयोजित निःशुल्क दंत रोग चिकित्सा परामर्श शिविर में उपस्थित नागरिकों के दांतों की जांच करने के पश्चात् परामर्श देते हुए डॉ. राजेन्द्र शर्मा, डेंटल सर्जन डॉ. आनन्द शर्मा, डॉ. श्रीमती रुचि शर्मा, दंत एवं मुख रोग विशेषज्ञ। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. ममता तथा अन्य।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹- 240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

माउंट आबू-ज्ञान सरोवर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा सेवा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय सम्मेलन में विभिन्न प्रांतों से आए युवाओं को 'जीवन को व्यसनमुक्त' बनाने के विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका एवं ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश, युवा प्रभाग की संयोजिका ब्र.कु. कृति, ब्र.कु. गीता, भीनमाल, ब्र.कु. नीतू, डॉ. ईशा अग्रवाल तथा अन्य अतिथिगण।

बिलासपुर-तखतपुर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित मेडिटेशन मेडिसिन कार्यक्रम के पश्चात् विधायक धर्मजीत सिंह ठाकुर, तखतपुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण, इंदौर, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. भुवनेश्वरी तथा अन्य।

गांधीनगर-चिलोड़ा(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग के 25 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में रजत जयंती समारोह पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए डीआईजी आलोक नंदीकर, तटरक्षक, एसपी पी.जी. नाथ, नेशनल कमांडो फोर्स, एसपी फाल्गुनी पटेल, एसआरपीएफ, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, कर्नल ब्र.कु. बीसी सती, ब्र.कु. नेहा दीदी तथा अन्य।

मेहसाणा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा प्रभाग द्वारा मेहसाणा सेवाकेन्द्र पर आयोजित 84 सीढ़ी प्रदर्शनी कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए कर्नल ब्र.कु. बीसी सती। मंचासीन हैं ब्र.कु. सरला तथा अन्य।

उज्जैन-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के शिव दर्शन धाम में 'पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता' पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. उषा बहन। मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, अनिल कुमार पंवार, पूर्व रेंजर एवं डॉ. विमल गर्ग।

इंदौर-बिजलपुर(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर इस वर्ष की थीम 'एक पेड़ माँ के नाम' पर आयोजित कार्यक्रम में वृक्षारोपण करने के पश्चात् स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. शशि, प्रदीप, प्रेमनगर, सुमित, मुकेश पाठक, शिव सागर कॉलोनी अध्यक्ष, बद्रीलाल चौधरी, रिटायर्ड बैंक मैनेजर, गोपाल सोहनी, इंजीनियर प्रशांत कोल्हापुरकर तथा अन्य।

स्वास्थ्य

मेटाबॉलिज़्म होगा फास्ट तो रहेंगे हमेशा चुस्त-दुरुस्त

मेटाबॉलिज़्म बढ़ाने के लिए उपयोगी 8 उपाय

इसमें से अधिकांश लोग अपने मेटाबॉलिज़्म को लेकर बहुत ज़्यादा चिंतित नहीं रहते, लेकिन होना चाहिए। मेटाबॉलिज़्म वह प्रोसेस है, जिसके तहत शरीर ग्रहण किए गए भोजन को ऊर्जा में बदलता है। तो जिसका मेटाबॉलिज़्म तेज़ होगा, वह भोजन को ज़्यादा बेहतर ढंग से पचा पाएगा और जिसका धीमा होगा, उसके पाचन की कैपेसिटी उतनी ही कम होगी। इसका असर वेट लॉस पर भी पड़ता है। फास्ट मेटाबॉलिज़्म वाले लोगों का वजन कंट्रोल में रहता है, जबकि स्लो मेटाबॉलिज़्म वाले लोगों को अक्सर मोटापे की समस्या रहती है। यहाँ जानते हैं कि कौन से फूड मेटाबॉलिज़्म की रफ्तार बढ़ा सकते हैं...

1. आंवला जूस

आंवला शरीर के टॉक्सिन्स को बाहर निकालने और इस तरह डिटॉक्सिफिकेशन में मदद करता है। रोज़ाना एक गिलास पानी में 3 चम्मच आंवले का रस मिलाकर पिएं। इससे शरीर के मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाने में मदद मिलेगी और वजन भी नियंत्रित किया जा सकेगा।

2. ग्रीन टी

इसमें कैटेचिन्स नामक तत्व भरपूर मात्रा में होता है। कैटेचिन्स हमारे शरीर के मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाने में मददगार होते हैं। कई स्टडीज़ में यह साबित हो चुका है कि लोग नियमित तौर पर ग्रीन टी पीते हैं, उनके मेटाबॉलिज़्म की रफ्तार भी तेज़ होती है। मेटाबॉलिज़्म फास्ट होने से वे चुस्त-दुरुस्त भी ज़्यादा होते हैं।

3. चिली फ्लैक्स

स्टडीज़ के अनुसार चिली फ्लैक्स(बीज सहित लाल मिर्च) में पाया जाने वाला कैप्साइसिन नामक तत्व शरीर के मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। इसलिए बघार(छौंक) में पिसी हुई लाल मिर्च के बजाए चिली फ्लैक्स का इस्तेमाल करना ज़्यादा बेहतर है।

4. काली मिर्च

इसमें पिपराइन नामक कम्पाउंड होता है जो शरीर के मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाने में मददगार होता है। सादे दही में चुटकी भर काली मिर्च के पाउडर का नियमित तौर पर सेवन करें। मेटाबॉलिज़्म बढ़ाने में फायदेमंद होगा। इसी तरह फ्राइड राइस या वेजिटेबल सूप में भी काली मिर्च के पाउडर का सेवन किया जा सकता है।

5. त्रिफला

यह तीन औषधियों आंवला, बहेड़ा और हरड़ का मिश्रण होता है। ये तीनों ही शरीर में जमे टॉक्सिन्स को बाहर निकालकर मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाने में मददगार होती हैं। हालांकि त्रिफला का सेवन कब, कैसे और कितना करना है, इसके लिए किसी आयुर्वेद विशेषज्ञ की सलाह ज़रूर लें।

6. प्रोटीन

कई अध्ययनों में साबित हो चुका है कि डाइट में जितना अधिक प्रोटीन शामिल रहेगा, मेटाबॉलिज़्म की रफ्तार भी उतनी ही अधिक रहेगी। यानी वजन घटाने के लक्ष्य को भी उतनी ही आसानी से पाना संभव होगा। ऐसा इसलिए, क्योंकि कार्बोहाइड्रेट की तुलना में प्रोटीन को ब्रेक करने में शरीर को अधिक मेहनत करनी पड़ती है।

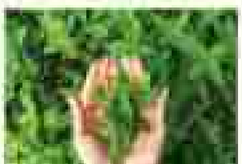

7. तुलसी

इसका नियमित सेवन करने से भी शरीर के मेटाबॉलिज़्म की रफ्तार को तेज़ कर अपने वजन को कंट्रोल में रखा जा सकता है। एक कप चाय में तुलसी के 4 से 5 पत्तों को पीस या क्रश करके मिला दीजिए। दिन में 2 बार इस चाय का सेवन करना पर्याप्त रहेगा।

8. ब्राह्मी

यह आयुर्वेदिक औषधि शरीर में क्रियाशील तमाम हॉर्मोन्स को बैलेन्स कर हमारे मेटाबॉलिज़्म की रफ्तार को बढ़ाने में मददगार होती है। इसी तरह अश्वगंधा भी मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाकर वेट लॉस में मदद करता है। हालांकि इनका सेवन कैसे और कितनी मात्रा में करना है, इसके लिए किसी आयुर्वेद विशेषज्ञ की सलाह ले लेनी चाहिए।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. अनीता, सीनियर कैंसर सर्जन डॉ. संजय देसाई, कस्टम विभाग के अपर आयुक्त दिनेश बिसेन, डॉ. शिल्पा देसाई, किरण बिसेन तथा अन्य।

सेंधवा-म.प्र.। ब्र.कु. साधना व ब्र.कु. राधा को सम्मानित करते हुए जिला महिला मोर्चा की जिलाध्यक्षा लक्ष्मी शर्मा, नगरपालिका अध्यक्ष बसंती बाई यादव तथा अन्य।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ योग भवन, घाटकोपर द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में महाराष्ट्र हाउसिंग एंड एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी के अभियंता ठाकुर जी, पुलिस अधिकारी, ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन की अतिरिक्त प्रभारी ब्र.कु. निष्ठुप्रिया तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

रीवा-म.प्र.। भारतीय थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी एवं उनकी धर्मपत्नी सुनीता द्विवेदी से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रकाश।

आप बहुत लक्की हो। हों भी क्यों ना! स्वयं भगवान ने आपको सेलेक्ट कर विश्व परिवर्तन के कार्य हेतु अपनी भुजा बनाई। इस दुनिया में छोटा-सा स्टेटस पाने के लिए कितनी मेहनत करते, पर यहाँ स्वयं भगवान ने हमारे में वो खूबी देखी जो पूरे विश्व में सुख-शांति के साम्राज्य की स्थापना के लिए चुना। हमने छोड़ा ही क्या! पाया बहुत। जिसकी जीवन नैया का खिवैया स्वयं भगवान हो, उसको छोड़ने का क्या गम! छूटी भी तो बुराइयां, कमज़ोरियां, जो हमें जन्म-जन्म से तंग कर रही थी। तो ये हमारा सबसे बड़ा भाग्य है ना! तो बस, इस अवसर को नम्र बनकर निर्माण के कार्य में लगाएं।

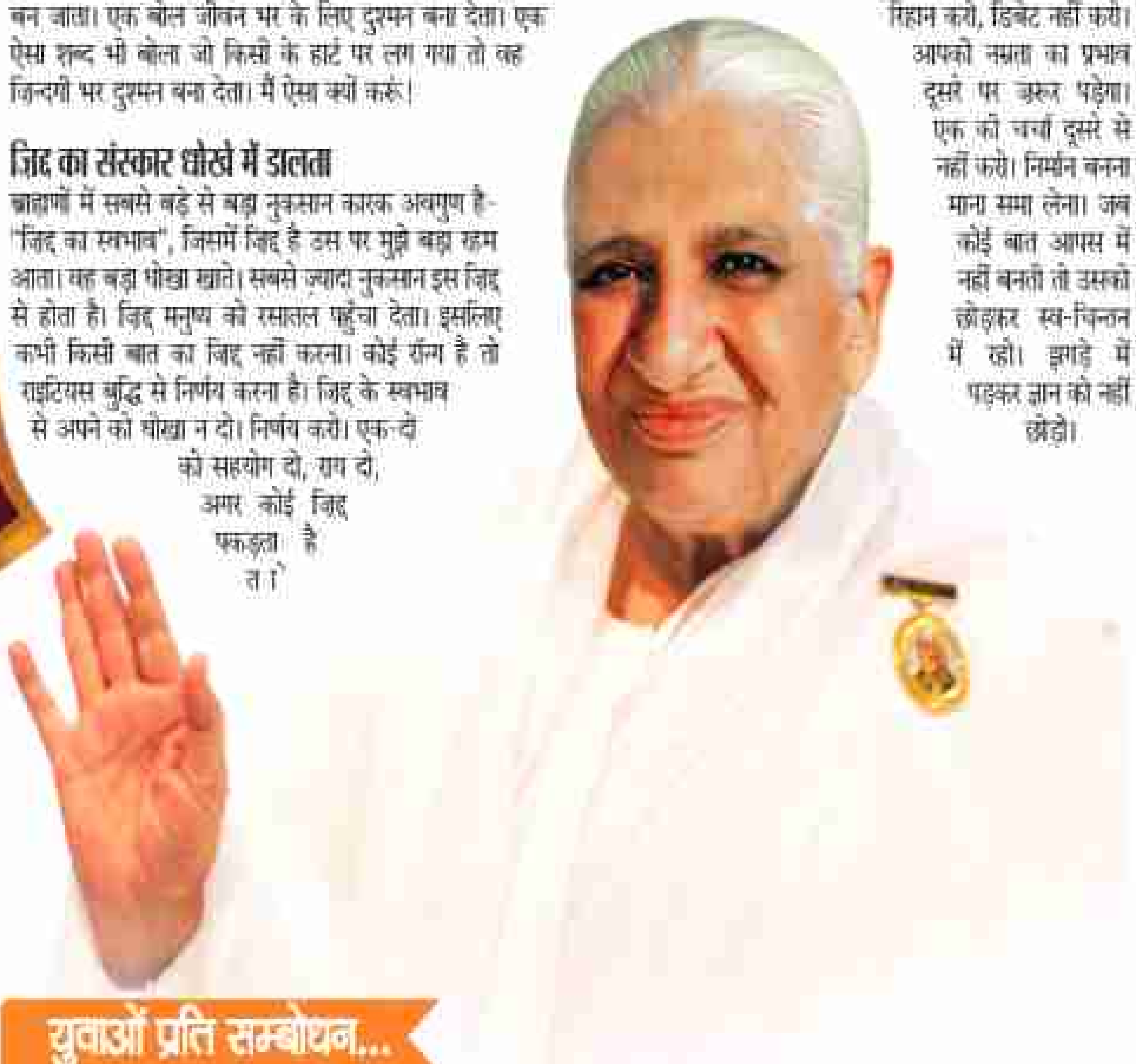

युवाओं प्रति सम्बोधन...

नव निर्माण में नवीनता के साथ नम्र बनो

आप हल्के हो जाओ, लाइट हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

निर्मान बनना माना समा लेना

नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो। पुरुषार्थ से डरो नहीं। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसको मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है। इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह-रिहान करो, डिबेट नहीं करो। आपको नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्मान बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व-चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

अपने को सदैव वेरी-वेरी लक्की समझो। वेरी लक्की समझने से विघ्न सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं - चल सकूंगा या नहीं, जाता हूं ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूं! यह संकल्प भी संशय की निशानी है। मैं वेरी लक्की हूं, लक्की उसको माना जाता जिसे दुनिया की अनेक ठोकरें आवें। पत्थर भी पूजनीय तभी बनता जब पानी की अनेक चोटें खाता। इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। मैं हमेशा समझती कि पेपर आना माना मुझे लक्की बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनाना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा! हजार पेपर आयें तो भी मैं सौ प्रतिशत पास रहूं। हरेक अपना-अपना पेपर लें। पढ़ाई ही मेरा पेपर है। सारा ब्राह्मण कुल मेरा मास्टर है। कोई भी मेरे सामने आता तो बुद्धि में यही रहता कि ये मेरे से कितनी रूहानियत भरकर जायेगा। जितना उसको आत्मिक शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा, उतना ही मुझे मार्क्स मिलेंगी। हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूं कि यह मुझे दे। मैं दाता हूं। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं मैं इसे स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी काँटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती- हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूं।

नफरत ही है सभी झगड़ों का मूल

कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक-दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह जिन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूं!

ज़िद का संस्कार धोखे में डालता

ब्राह्मणों में सबसे बड़े से बड़ा नुकसान कारक अवगुण है- "ज़िद का स्वभाव", जिसमें ज़िद है उस पर मुझे बड़ा रहम आता। वह बड़ा धोखा खाते। सबसे ज़्यादा नुकसान इस ज़िद से होता है। ज़िद मनुष्य को रसातल पहुंचा देता। इसलिए कभी किसी बात का ज़िद नहीं करना। कोई रॉन्ग है तो राइटियस बुद्धि से निर्णय करना है। ज़िद के स्वभाव से अपने को धोखा न दो। निर्णय करो। एक-दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई ज़िद पकड़ता है तो।

मर्यादा में हल्के तो निंदा के पात्र

हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउण्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं, तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखते हैं। इसलिए हम कन्ट्रोल करते... कुमार-कुमारियां मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती है। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता है। सेन्टर पर कुमारियाँ अकेली रहती, आप उनसे बैठकर बातें करो- यह मर्यादा नहीं है। मैं कहती इस बात में समझो हम सन्यासी हैं। कुमार-कुमारी माना सन्यासी। सन्यासी माना हँसना, बोलना, वृत्ति-दृष्टि सबका सन्यास। जितना यह पाठ पक्का रखेंगे उतना अच्छा। अगर मर्यादा में हल्के रहेंगे तो टीका होगी। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता, शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आँच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा- क्योंकि हल्के होकर चले।

चाइना-शंघाई। 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शंघाई में भारतीय वाणिज्य दूतावास में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में उरुग्वे, थाईलैंड, दक्षिण अफ्रीका के महावाणिज्य दूत, शंघाई के कुछ प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों, संस्थानों के प्रशासक, विद्वान, ब्र.कु. स्वप्ना बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

नवा रायपुर-छ.ग.। अटल नगर के श्री सत्य साईं चाईल्ड हार्ट केयर हॉस्पिटल में इलाज के लिए आये लोगों के परिवारजनों व चिकित्सकों को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. बीणा दीदी। कार्यक्रम में हॉस्पिटल के सेन्टर प्रमुख एस. जगदीश राव, डॉक्टर्स तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

ईश्वरीय मर्यादा इस जीवन का आदेश

ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक्ट बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आँसू बहा रहे हैं, रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पैनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया उसने सब त्यागा। 3:30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए? इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

सब सेवा में सफल करो, कल किसने देखा

सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो, जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उतना ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए। लौकिक को भी थोड़ा चलाना करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिस-सर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टिकल लिखो, डायलॉग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो, वक्त पर सब काम आता है।

परमात्म ऊर्जा

सदा हर्षित रहने के लिए कौन-सी सहज युक्ति है? सदा हर्षित रहने का यादगार रूप में कौन-सा चित्र है, जिसमें विशेष हर्षितमुख को ही दिखाया है? विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है। विशेष, हर्षित होने का चित्र ही यादगार रूप में दिखाया हुआ है। विष्णु अर्थात् युगल रूप। विष्णु के स्वरूप आप लोग भी हो ना। नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी आप ही बनने वाले हो या सिर्फ बाप बनते हैं? नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं वह ऐसे हर्षित रहते हैं। तो हर्षित रहने का साधन क्या हुआ? ज्ञान का सिमरण करना। जो जितना ज्ञान को सिमरण करते हैं वह उतना ही हर्षित रहते हैं।

ज्ञान का सिमरण ना चलने का कारण क्या है? व्यर्थ सिमरण में चले जाते हो। व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता। अगर बुद्धि को सदा ज्ञान के सिमरण में तत्पर रखो तो सदा हर्षित रहेंगे, व्यर्थ सिमरण होगा ही नहीं। ज्ञान का सिमरण करने के लिए सदैव हर्षित रहने के लिए खज़ाना तो बहुत मिला हुआ है। जैसे आजकल कोई बहुत धनवान होते हैं तो कहते हैं इनके पास तो अनगिनत धन है। ऐसे ही ज्ञान का खज़ाना जो मिला है वह गिनती कर सकते हो? इतना अनगिनत होते हुए फिर छोड़ क्यों देते हो? कोई कमी के कारण ही उस चीज़ का न होना सम्भव होता है। लेकिन कमी न होते भी चीज़ न हो, यह तो नहीं होना चाहिए ना। ज्ञान के खज़ाने से यह बातें ज्यादा अच्छी लगती हैं क्या? जैसे समझते हो कि यह बहुत समय की आदत पड़ी हुई है, इसलिए ना चाहते भी आ जाता है। तो अब ज्ञान का सिमरण करते हुए कितना समय हुआ है? संगम का एक वर्ष भी कितने के बराबर है? संगम का एक वर्ष भी बहुत बड़ा है। इसी हिसाब से देखो तो यह भी बहुत समय की बात हुई ना।

तो जैसे वह बहुत समय के संस्कार होने के कारण ना चाहते भी स्मृति में आ जाते हैं, तो यह भी बहुत समय की स्मृति नेचुरल क्यों नहीं रहती? जो नई बात व ताज़ी बात होती है वह तो और ही ज्यादा स्मृति में रहनी चाहिए, क्योंकि प्रेजेन्ट है ना। वह तो फिर भी पास्ट है। तो यह प्रेजेन्ट की बात है, फिर पास्ट क्यों याद आता? जब पास्ट याद आता है तो पास्ट के साथ-साथ यह भी याद आता है कि इससे प्राप्ति क्या होगी? जब उससे कोई भी प्राप्ति सुखदाई नहीं होती है तो फिर भी याद क्यों करते हो? रिजल्ट सामने होते हुए भी फिर भी याद क्यों करते हो? यह भी समझते हो कि यह व्यर्थ है। व्यर्थ का परिणाम भी व्यर्थ होगा ना। व्यर्थ परिणाम समझते भी फिर प्रैक्टिकल में आते हो तो इसको क्या कहा जाए?

जोगुलंबा गद्वाल-तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल प्रभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के शुभारम्भ के लिए हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए पुलिस अधीक्षक एसपीटी श्रीनिवास राव। साथ हैं डी.एस.पी. मोगुलय्या, सी.आई. टांगुटूर श्रीनिवासुलु, ब्र.कु. मंजुला बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

कथा सरिता

ईमानदारी का पाठ

पुराने समय में एक राजा अपनी प्रजा को बहुत कष्ट देता था। राजा दूसरों का धन लूट लेता था। एक दिन गुरुनानक उस क्रूर राजा के राज्य में पहुंचे। जब ये बात राजा को मालूम हुई तो वह भी गुरुनानक

से मिलने पहुंचा।

शिष्यों ने गुरुनानक को राजा के बारे में सबकुछ बता दिया था। इसीलिए जब राजा उनके पास आया तो गुरुनानक ने उससे कहा कि राजन मेरी मदद करें, मेरा एक पत्थर अपने पास गिरवी रख लो। ये मुझे बहुत प्रिय है। इसका विशेष ध्यान रखना।

राजा ने कहा कि ठीक है, मैं इसे रख लेता हूं लेकिन आप इसे वापस कब ले जाएंगे? गुरुनानक ने जवाब दिया कि जब हमारी मृत्यु हो जाएगी और हम मृत्यु के बाद मिलेंगे तब ये पत्थर मुझे वापस कर देना।

राजा हैरान हो गया, उसने कहा कि ये कैसे संभव है? मृत्यु के बाद कोई भी अपने साथ कुछ कैसे ले जा सकता है?

गुरुनानक ने कहा कि जब आप ये बात जानते हैं तो आप प्रजा का धन लूटकर अपना खज़ाना क्यों भर रहे हैं?

राजा को गुरुनानक की बात समझ आ गई। उसने क्षमा मांगी और संकल्प लिया कि अब से वह अपनी प्रजा पर अत्याचार नहीं करेगा। इसके बाद से राजा ने अपने खज़ाने का उपयोग प्रजा की देखभाल में खर्च करना शुरू कर दिया।

सीख : हमें धन कमाने के लिए कभी भी गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए, क्योंकि कोई भी व्यक्ति मरने के बाद कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा सकता। सबकुछ यहीं छोड़कर जाना होता है। इसीलिए धर्म के अनुसार काम करना चाहिए।

कोरबा-छ.ग.। विश्व पर्यावरण दिवस, नवनिर्वाचित नगरपालिका अध्यक्ष एवं पार्षदों का सम्मान समारोह तथा विश्व एकता एवं विश्वास' कार्यक्रम में 20 से अधिक पार्षदों के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रूक्मणी दीदी, ब्र.कु. बिंदु,जमनीपाली, ब्र.कु. रचना, नगर पालिका अध्यक्ष प्रदीप नामदेव,चांपा, नगर पालिका उपाध्यक्ष अमरजीत सिंह खटकर,चांपा, विद्युत प्लांट चीफ इंजीनियर कैलाश अग्रवाल तथा अन्य।

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। गुजरात ज़ोन की पूर्व निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी को छठवीं पुण्यतिथि पर ब्रह्माकुमारीज अटलादरा और स्टर्लिंग हॉस्पिटल वडोदरा रिसर्च सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'रक्तदान शिविर' कार्यक्रम में ध्वनि ब्लड बैंक के ट्रस्टी अश्विन गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम। मौके पर उपस्थित रहे नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. हार्दिक गजेरा, ब्र.कु. डॉ. जयन्त पटेल, प्रो. किन्नरी ठक्कर, सोशल वर्कर गोपाल शर्मा, भाजपा कोषाध्यक्ष गोपाल रबारी तथा अन्य।

नवसारी-गुज.। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करते हुए ब्र.कु. गीता, कृषि यूनिवर्सिटी के डॉ. एस.डी. कच्छाद, ब्र.कु. बाबू तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

तुमसर-महा.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर इस वर्ष की थीम 'एक पेड़ माँ के नाम' पर आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करते हुए ब्र.कु. शकित, नेताम सर, लक्ष्मण जवंजरे तथा अन्य।

जबलपुर-रांझी(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पेड़ लगाने की प्रतिज्ञा करने के पश्चात् पौधा लिए समूह चित्र में ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. साधना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारीज आनंदीप भवन द्वारा चंदन नगर चौराहे पर आयोजित नशा मुक्त चित्र प्रदर्शनी द्वारा सभी को जागरूक करने के पश्चात् नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा कार्यक्रम में उपस्थित हैं स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. ललिता, ब्र.कु. प्रतिमा, नशा मुक्ति कलाकार डॉ. राजकुमार जैन, सामाजिक कार्यकर्ता प्रकाश मालवत, योगाचार्य दीपक जायसवाल, जाईदीप के पूर्व अध्यक्ष शंकर पैंसारा व भारत सिंह राठौर तथा अन्य।

मजबूरी से नहीं मजबूती से भगवान के कार्य में लें हिस्सा - दादी

हमें संसार में सबसे बड़ी लॉटरी मिली है, वो अवसर हमारे पास आया है जो हमें मन-इच्छित फल देने वाला है। हम तो बिछुड़ गये थे, कहीं अंधकार में भटक रहे थे, पर हमें तो घर बैठे वो मिला जो संकल्प में भी, सोच में भी नहीं था। कहते हैं, दिन का खोया रात को वापस आ जाये तो उसको खोया हुआ नहीं कहेंगे। यह कहावत हमारी ही है ना! हम परमात्म बाप को भूले तो आधा कल्प खो गये। खो भी वहाँ गये जहाँ माया ने अपनी गोद में बिठा लिया। और सिर्फ गोदी में ही नहीं, हमें गले तक पकड़ कर रखा है। जैसे कहते हैं सोने में खाद पड़ती, वैसे ही मुझ सोने में तमोप्रधानता की खाद पड़ गई थी। बाबा(परमात्मा) ने आकर के हमें फिर से ज्ञान-योग की भट्ठी में डाला है और खाद निकाल सच्चा सोना बनाया है। हम तो माया के पास खो गये थे, बाबा ने अब इस संगम पर हम खोये हुए बच्चों को फिर से गोदी में बिठाया है और वापस अपने घर ले चल रहा है। इसलिए बाबा हमें रोज़ मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे कहकर सम्बोधित करता है।

हम तो बाबा के बहुत प्यारे बच्चे हैं, जिन्हें स्वयं बाप ने पाला है। वैसे भी कोई गुणवान आत्मा होती है तो सभी को प्यारी होती है। उसके लिए कहते हैं इसे तो स्वयं भगवान ने फुर्सत से बैठकर बनाया है। गुणों की सुंदरता को देख कहते हैं कि इसे तो भगवान ने खास बनाया है। बनाया सबको है, लेकिन अगर गुणों को देखते हैं तो कहेंगे कि भगवान ने खास बनाया है। हम खास हैं, तभी तो भगवान ने भी खास बनाया है। कैसे बनाया? हमारा भाग्य विधाता हमारे भाग्य के तकदीर की लकीर खींच रहा है। इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा निरंतर करनी है। स्वयं भगवान ने स्पेशल हमारे ललाट पर भाग्य की लकीरें खींची हैं। तब तो हम कहते हैं कि स्वयं भाग्य विधाता हमारे तकदीर की लकीर खींच रहा है। इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा गानी है। भाग्यविधाता ने घृत डाल हमारा दीया जगाया है। इसलिए सब कोई पूछते, क्या तुम्हें निश्चय है कि तुम्हें भगवान बढ़ाते हैं? तो हम कहते कि क्या इसमें भी कोई संशय की बात है! अगर कोई पूछते हैं, तो माना संशय है। उनकी तकदीर की लकीरें अभी तक खींची हुई नहीं हैं।

मांगकर दूध को... पानी न बनायें

हम तकदीर जगाकर आये हैं। जगाने की मेहनत नहीं करते। हमारी तकदीर जगी हुई है। हम विश्व की सेवा पर उपस्थित हैं। एक तरफ भक्त कहेंगे, हे भगवान! मेरी तकदीर अच्छी करना। हम कहते हैं, अच्छों से अच्छी, महान से महान, सृष्टि को रोशन करने वाली तकदीर बाबा ने हमारी जगा दी है। ब्राह्मण अगर कहे कि बाबा हमारी तकदीर जगा कर रखना, तो उसको क्या कहेंगे? ये संशय है ना! बाबा हमें मदद करते रहना, क्या बाबा हमें मदद देता नहीं जो मैं मांगती हूँ! कहावत भी है, सहज मिले सो दूध बराबर..., बाबा ने हमारी दूध बराबर तकदीर बनाई है। हम मांगकर उस दूध को पानी क्यों बनाते हैं! दृढ़ निश्चय वाले कभी भी कुछ मांग नहीं सकते। वह तो ओहो! बाबा... वाह बाबा... के गीत गायेंगे।

इतनी दूरी न बना लें...

बाबा कहते, मैं रोज़ बच्चों के नाज़ों का खेल देखता हूँ, क्योंकि बच्चे अभी तक बहुत नाज़-नखरे करते हैं। स्वयं को नीचे बिठाते और बाबा को बहुत ऊँचाई पर देखते हैं, तभी दूरी का अनुभव होता है। मैं तो बाबा को अपने साथ बिठाती, मैं बाबा के समान बनकर साथ में बैठ जाती। ऐसे नहीं, बाबा आप तो अर्श पर हैं, मैं तो फर्श पर हूँ। यह इतनी दूरी भी क्यों। दूर रहेंगे तो धरनी की धूल आकर्षित करेगी। जब बाबा ने हमें पवन पुत्र बनाकर उड़ना सिखाया, फिर हम धूल में क्यों खेलते! इतनी दूरी क्यों! समान बनकर बाबा के साथ क्यों नहीं बैठ जाते!

हम कौन हैं, इस स्वमान में रहें

हम हैं बाबा की सच्ची-सच्ची परियाँ। हमारी बुद्धि धरनी पर क्यों! हम तो धरनी के सितारे हैं। हम जग को रोशन करने वाले हैं। ऐसे रोज़ अमृतवेले अपनी मस्ती की छाप लगाओ। फिर कभी नहीं कहना पड़ेगा कि बाबा हमारी तकदीर जगा दो। बाबा ने हमें चोटी से पकड़कर निकाला और अपने साथ गद्दी पर बिठाया है। हम कोटों में कोई, सेलेक्टेड डायमण्ड हैं। फिर हम डायमण्ड कहें, अभी मेरे में दाग लगा हुआ है, तो अपनी वैल्यू को हम खुद ही कम क्यों करते! बाबा ने हमें सेलेक्ट कर लिया ना! हम बाबा के पास पहुँच गये। दुनिया देख-देख जिंदगी खो, हम तो बाबा के बन गये, बाबा हमारा बन गया।

जहाँ हमें मांगने के बजाए महान बनने की शिक्षा मिली। कमज़ोर बनने के बजाय कमाल करने की बात समझ में आई। हम कहीं खो गए थे, अपने आप से और परमात्मा से बिछुड़ गए थे, पर सुबह का खोया, रात को घर आ जाये, उसको खोया नहीं कहते। ये बात हमें परमात्मा ने बहुत ही अच्छी तरह से समझाई और हमने समझी भी। बस इसी की कमाल से जीवन धन्य बन गया। न सिर्फ धन्य, बल्कि दूसरों को भी महान बनाने के काबिल हो गए। यही तो कमाल है हमारे प्राण प्यारे बाबा की। हम न सिर्फ धरती के सितारे बने, बल्कि दूसरों के सहारे भी बने।

हम कमज़ोर नहीं, कमाल करने वाले

तो हे बाबा के अनन्य सिकीलधे बच्चे! तुम ऐसे भी नहीं कहो, क्या करूँ माया आ जाती है। वह आती नहीं, तुम्हें छूती भी नहीं। आप छुट्टी देते हो तो नज़दीक आ जाती है। कहते हैं, मनसा में आकर्षण होती है, लेकिन माया खाती तो नहीं है उनको खाने नहीं देना, बस इतना करना, आए..., आकर चली जाए। आप उनका स्वागत नहीं करना। उनकी पालना नहीं करना। माया आए, माया खाए नहीं, उसकी सम्भाल रखना। गेट पर चौकीदार होशियार रखना जो वो अंदर आकर नुकसान न करे। गेट के अंदर आने ही नहीं देना। बाहर से आए, नमस्कार करके चली जाए। हमारा उसमें क्या जाता है! ऐसे नहीं कहो, माया आती है। वह आती नहीं है, पेपर लेती है आप सभी की कमियों का, बुराइयों का। बुराइयों को दूर करने के लिए ही बाबा ने इसका नाम रखा है राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ। किसी के ऊपर कोई ग्रह हो तो उसे इस यज्ञ में स्वाहा कर देना। क्रोध का, काम का, जो भी ग्रह हो, तो शिव बाबा के मंत्र से, उसे प्यार के बल से निकाल कर स्वाहा कर देना। फिर माया मासी कभी नहीं आयेगी।

पावन बनकर पावन दुनिया बनायेंगे

जब तक तन में प्राण है, तब तक मेरा प्रण है, 'एक बाबा दूसरा न कोई'। हमारा प्रण है हम आपके सपूत बच्चे बनकर आपका नाम बाला करेंगे। हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया बनायेंगे। हम नई दुनिया स्वर्ग के लायक बनकर सृष्टि पर स्वर्ग ज़रूर लायेंगे। ये सब हमारे प्रण हैं। प्रण यानी प्रतिज्ञा। जब तक प्राण है, तब तक यह प्रतिज्ञा पक्की है। जबसे बीके बने, तब से यह प्रण अथवा वायदा किया है ना। यही वायदा पक्का निभाते रहना। ब्रह्माकुमार माना शिव बाबा हमारा आपसे वायदा है कि मरेंगे, जियेंगे, प्राण तजेंगे, लेकिन प्रण कभी नहीं छोड़ेंगे। हम देवता बनेंगे, एक धर्म-एक राज्य लायेंगे, पावन बनकर पावन दुनिया बनायेंगे।

मानवता से भी उपराम है ये कृष्ण का व्यक्तित्व

– ब्र.कु. अनुज भाई, दिल्ली

इस दुनिया में हम सबको एक व्यक्तित्व के दायरे में बांधते हैं- जैसे गुरुनानक देव जी का एक व्यक्तित्व है, उस व्यक्तित्व के आगे आप कुछ सोच नहीं सकते। ऐसे ही महात्मा बुद्ध, महावीर जैन, ईसा मसीह, सबका एक व्यक्तित्व है। श्रीराम चन्द्र का एक व्यक्तित्व है। इन सबका व्यक्तित्व जब हम देखते हैं तो उसी हिसाब से हम टिप्पणी करते हैं। लेकिन अगर आप एक सम्पूर्ण चरित्र को, पूर्ण अवतार के रूप में अगर किसी को देखते हैं तो कृष्ण को देखते हैं। कृष्ण का व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यक्तित्व है। लेकिन उस व्यक्तित्व को परिभाषित करना आसान नहीं है।

जैसे आप सभी ने रसखान को पढ़ा होगा, सूरदास को पढ़ा होगा, ऐसे बहुत सारे अलग-अलग कवियों को पढ़ा है, सबने कृष्ण की महिमा अपने हिसाब से की है। जैसा उन्होंने देखा है। माना एक व्यक्तित्व में अनेक रूप इतने सारे हैं जिसको इतने सारे नामों के साथ बुलाया जाता है। फिर भी वो पूर्ण सा अनुभव नहीं होता। लगता है कि नहीं कुछ और जुड़ना चाहिए, कुछ और इसमें एड होना चाहिए। तो जब हम ऐसा सोचते हैं, तो सोचते हैं कि कैसा व्यक्तित्व रहा होगा! इसलिए कृष्ण के व्यक्तित्व को अगर ज़ीरो व्यक्तित्व कहा जाए मतलब उसका ना कोई बिगनिंग है, ना कोई एंड है, ना कोई शुरूआत है, ना कोई अंत है। क्योंकि शुरूआत और अंत जिसका होगा ना उसको लोग एक सीमा में बांध देंगे। लेकिन कृष्ण के व्यक्तित्व को सीमा के परे की स्थिति में देखा जाता है। कारण उसको हम एक परिधि में नहीं बांध सकते। इसीलिए परमात्मा को सम्पूर्ण जो समर्पित होता है, जैसे हमारे परमात्मा के सबसे नम्बर वन जो बच्चे कहे जाते हैं, जिनको प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं उन्होंने अपने आपको सम्पूर्ण रूप से एक परसेन्ट भी यहाँ के व्यक्तित्व के हिसाब से नहीं रखा। सम्पूर्ण व्यक्तित्व परमात्मा का अपने अन्दर समाया। माना पूरी तरह से समर्पित किए। और जब हम अपने आपको पूरी तरह से परमात्मा में खो देते हैं तब जाके हमारा ज़ीरो व्यक्तित्व बनता है। उस ज़ीरो व्यक्तित्व को ही लोग आज एक्सप्लेन नहीं कर पा रहे, परिभाषित नहीं कर पा रहे। क्यों? क्योंकि उसने पूरी तरह से खुद को समर्पित किया। जिन्होंने थोड़ा-थोड़ा भी अंश रखा उनको लोगों ने एक सीमा में बांध दिया।

जैसे श्रीराम चन्द्र जी को कोई भी देखता है तो उनको ये कहेगा कि ये जीवन है, मर्यादित है, बहुत सारे टाइटल मिलेंगे। लेकिन एक जगह जाकर रुक जायेगा कि अरे इन्होंने डांस नहीं किया कभी, नृत्य नहीं किया कभी। सो हम उनको नृत्य के रूप में देख ही नहीं सकते। उस व्यक्तित्व को उस तरह से परिभाषित ही नहीं कर सकते। इसीलिए मानवता से परे की स्थिति श्रीकृष्ण की है। जिसमें सब है और उसको समझने के लिए हमें उस लेवल तक जाना होगा। देखो हमको बहुत छोटी-छोटी बातों का कितना अहंकार का आ जाता है। अहंकार का मतलब ये नहीं कि आप किसी बात को मान नहीं रहे हैं। या कोई बहुत बड़ा अभिमान है, नहीं। अहंकार का मतलब जो बात करने के लिए हम तैयार नहीं है। जैसे कोई कह दे आपको, आपको गाना, गाना नहीं आता, आपको डांस करना नहीं आता, तो कहा जाए तो आप कहेंगे कि नहीं, नहीं ये सब तो मुझे ठीक नहीं लगता। लेकिन कृष्ण को सब ठीक लगता था। और कुछ भी ठीक नहीं लगता था। ऐसा दिखाया जाता है धारावाहिकों में सब जगह।

तो उस समय सम्पूर्ण व्यक्तित्व को सम्पूर्ण तरीके से समझने के लिए हमको सम्पूर्णता की स्थिति को लाना होगा। इसलिए कृष्ण मानवता से परे की स्थिति का नाम है। इसलिए उसको समझना और उसको जानने के लिए हमको पूरी तरह से अपने आपको हर तरह से समर्पित करना होगा, तब हम उस व्यक्तित्व को समझ पाएंगे।

प्रश्न : सेना में पद से प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है इसके लिए कुछ अनचाही सी, अनजानी सी एक होड़ लगी रहती है, इस घुड़दौड़ से कैसे बचा जाये? इससे बचने के दौरान कार्यक्षमता पर, कुशलता पर, मोटिवेशन पर कोई असर न पड़े ऐसा हम क्या करें?

उत्तर : ये तो ठीक है कि हर व्यक्ति अपना प्रमोशन चाहता है और पीछे जैसे हुआ था मिलिट्री में तो ऑफिसर्स को प्रमोट कर ही नहीं रहे थे। जो मेजर थे वो मेजर ही रह गये, जो लेफ्टिनेंट कर्नल थे वो लेफ्टिनेंट कर्नल ही रह गये। तो जब नई सरकार आई बीजेपी की तो उन्होंने उन्हें अवसर दिया सेना में जाने का, तो लोगों का एक इन्ट्रेस्ट पैदा हुआ। नहीं तो सोचते हैं कि हम तो वहीं के वहीं रह जाते हैं। तो प्रमोशन होना तो बहुत अच्छी चीज़ है। लेकिन हर व्यक्ति को अपनी जो योग्यताएं हैं, अपनी जो स्किल है, अपनी एडमिनिस्ट्रेटिव कला है, उसको बढ़ाते चलना चाहिए, व्यवहार भी सुन्दर रखना चाहिए। अपने साथियों से भी, अपने बड़ों से भी। एक व्यवहार जो हमारा है, एक एप्रीसिएशन है एक-दूसरे का, ये बहुत अच्छा माहौल बनाता है। इससे क्या होगा, प्रमोशन भी आपकी होगी और आपको जो भागदौड़ से एक टेन्शन-सी रहती है वो भी समाप्त हो जायेगी और आप बहुत रिलेक्स लाइफ जियेंगे।

अब आप मेडिटेशन प्रारम्भ कर दें। सोल कॉन्शियसनेस की प्रैक्टिस प्रारम्भ कर दें। और सवेरे उठकर बहुत सुन्दर संकल्पों से अपने को चार्ज किया करें। ये मैं बहुत समय से सीखा रहा हूँ और आपको बहुत डिटेल में सीखना हो तो यूट्यूब पर मेरे नाम से जो चैनल है वो खोलेंगे तो 'श्रेष्ठ विचार सुखी जीवन का आधार' ये आपको हैडिंग मिलेगा उसमें सब्कॉन्शियस माइंड का डिटेल नॉलेज है। श्रेष्ठ विचार सुखी जीवन का आधार इसको आप डिटेल स्टडी कर लेंगे। डिटेल माना दस-दस मिनट के लेक्चर हैं, आपको सुनने में मज़ा आयेगा, कभी भी आप सुन लें।

तो सवेरे उठकर वो संकल्प करेंगे जो आप चाहते हैं। लेकिन एक चीज़ हमेशा ध्यान रखनी है कि एक ऊंचा टार्गेट रखें कि मुझे इस रैंक तक पहुंचना है। उसके लिए जो प्रयास है, या आपको एग्ज़ाम देना है, वो आप करते रहें। लेकिन मान लो वो आपको न मिले तो हल्के रहें, एक्सेप्ट करें, इसी में कल्याण है। इसी में हम खूब काम करेंगे। इसी में ज़िम्मेदारियों से हम काम करेंगे, तो आप बहुत सुखी रहेंगे। कभी-कभी क्या होता है मनुष्य की एक्सपेक्टेशन्स पूरी नहीं हुई बहुत परेशान, बहुत निराश, कई-कई लोग तो सुसाइड ही कर लेते हैं। अरे भाई जीवन कितना इम्पॉर्टेंट है आपके परिवार हैं, आपके बच्चे हैं आपके पीछे। आप एक प्रमोशन के लिए उन सबको रोता छोड़कर जा रहे हो, ये तो इमोशनल व्यक्ति की निशानी है। हमें इतना इमोशनल नहीं होना चाहिए। हमें बहुत स्ट्रॉन्ग बनना है। इमोशनल भी हों और आगे बढ़ने का पूरा प्रयास भी करें लेकिन जो कुछ मिले उसको एक्सेप्ट करके एन्जॉय भी करें। ये अपनी मेंटेलिटी बना लें।

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मन की बातें

प्रश्न : ये जो मेडिटेशन हमें सिखाया गया, क्या ये मेडिटेशन सेल्फ रियलाइज़ेशन प्रोसेस है और क्या ये रिलेक्सेशन कंसंट्रेशन या सेल्फ हिप्नोसिस जैसा ही है या उससे अलग है? क्या डिफ्रेन्स है?

उत्तर : देखिए सेल्फ हिप्नोसिस इसको नहीं कहा जाता, लेकिन सेल्फ सजेशन तो इसमें होते ही हैं इसीलिए कई लोग तो इसे हिप्नोटिज़्म ही समझ लेते हैं। ये वो नहीं है, ये है सोल को कॉन्शियस में आ जाना। हम हैं तो रूह लेकिन हमने अपने आप को बॉडी मान लिया, बॉडी कॉन्शियस में आ गये, इसलिए मनोविकार बढ़ गए, इसलिए दुःख बढ़ गए, अहंकार बढ़ गया, क्रोध बढ़ गया, इस राजयोग का लक्ष्य होता है हमें अपनी कॉन्शियसनेस को बदलना है। जो रियल कॉन्शियसनेस है, मैं आत्मा हूँ, मैं रूह हूँ, रूहानी कॉन्शियसनेस में आना, इसके लिए हमें विचारों की कंसन्ट्रेशन भी चाहिए और इससे सेल्फ रियलाइज़ेशन तो हो ही जाएगा। सेल्फ पर कंसन्ट्रेट कर रहे, सेल्फ रियलाइज़ेशन का अर्थ भी लोग नहीं जानते। बस इतना ही कि सेल्फ रियलाइज़ेशन है, इतना ही जानते हैं। लेकिन सेल्फ के अन्दर जो डीप साइलेन्स है उसकी अनुभूति, स्वयं के अन्दर जो भारी प्योरिटी है उसकी अनुभूति, स्वयं के अन्दर जो बहुत ज़्यादा शक्तियां छुपी हुई हैं उनकी अनुभूति, इसको सेल्फ रियलाइज़ेशन कहते हैं। जैसे-जैसे मेडिटेशन की प्रैक्टिस होगी वैसे-वैसे तेज़ी से होता जाएगा।

प्रश्न : यदि हम ईश्वर के अंश हैं तो हमें सेल्फ रियलाइज़ेशन में या उस डिवाइन से कनेक्ट होने में इतनी मेहनत क्यों करनी पड़ती है?

उत्तर : देखिए हम उसके अंश नहीं हैं। हम उसके बच्चे हैं। अंश में तो वही क्वालिटी होती है ना जो मूल चीज़ में होती है। जब मान लो सोने का एक पीस है आपके पास 50ग्राम का, अब आपने उसमें से एक अंश निकाल लिया, 10ग्राम का, तो जो क्वालिटी बाकी सोने में है वही तो दस ग्राम में भी होगी ना! 1 ग्राम भी जो सोना लिया उसमें भी वही क्वालिटीज़ होंगी, प्रॉपर्टीज़ होंगी जो पूरे में है। तो हम भगवान के अंश नहीं, भगवान कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका अंश किया जा सके। हम उसके बच्चे हैं। आत्माओं का एक अलग एक्सिस्टेंस(अस्तित्व) है पूरा ही, हमारे में भी वो क्वालिटीज़ हैं जो हमारे परमपिता में हैं। लेकिन वो सब खत्म कर दी है हमने। जैसे हमारे अन्दर बहुत शांति थी लेकिन हमने मनोविकारों के वश हो उसे समाप्त कर दिया। मैं आत्मा आनंद स्वरूप थी, हमने वो आनंद नष्ट कर दिया, संसार की इच्छाओं के पीछे भागकर। अब हम उसे जागृत कर रहे हैं अपने को रिमाइंड कराके कि मैं आनंद स्वरूप हूँ ताकि वो आनंद फिर से जो दब गया है, छुप गया है, फिर से एक्टिव हो जाए, हमारा जीवन आनंदित हो जाए। हम अंश नहीं हैं। क्योंकि हमने अपनी इच्छाओं को बहुत भगा दिया है। क्योंकि हमने मन को बहुत भटका दिया है। ये हमने भटकाया है, ये अपने आप नहीं भटका है।

इसलिए हमें उसमें मेहनत लग रही है लेकिन प्रैक्टिस की जाएगी, कुछ स्टडी और अच्छी की जाएगी क्योंकि सात दिन का कोर्स हो जाना कोई कम्पलीट नॉलेज नहीं है। ये तो एडमिशन लिया है और आगे अच्छी स्टडी करेंगे। अपने मन को कैसे शांत किया जाए, अपने मन को कैसे एकाग्र किया जाए। प्योरिटी ऑफ माइंड को कैसे बढ़ाया जाए, अपने एटीट्यूड को कैसे अच्छा किया जाए, तो फिर ये सब इज़ी होगा। तब हम ऑटोमेटिकली आगे बढ़ेंगे।

Contact e-mail - bksurya@yahoo.com

व्यक्तित्व विकास का अहम फॉर्मूला

4H+M

खुशी महसूस करें चाहे सफलता मिले या न मिले। जैसे अगर मैं इंजीनियर बना पर मैं खुश नहीं हूं, तो बनने का क्या फायदा? इसलिए मुझे कर्म में खुशी मिलनी चाहिए तथा उससे लोगों की जिन्दगी भी खुश रहनी चाहिए।

आप अपने बच्चों को कैसा देखना चाहते हैं? इसके लिए आपके मन में क्या विचार आते हैं? अगर हम कहें कि हमारे बच्चे बड़े होकर अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाएं जिससे लोगों को प्रेरणा मिले, तो उसके लिए हमें क्या योजना बनानी चाहिए? क्या इसके बारे में आपने कोई योजना बनाई है? या टीवी और इंटरनेट के प्रभाव में वे बिना किसी योजना के बड़े हो रहे हैं? जब हम छोटे-छोटे विषयों जैसे कि घर, गाड़ी की विस्तृत योजना बना सकते हैं तो क्या हमें अपनी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति यानी अपनी संतान के पालन-पोषण की सही योजना नहीं बनानी चाहिए! जब हम अपने बच्चे के पालन-पोषण की योजना बनाने बैठें तो उनके जीवन, व्यक्तित्व और सोचने के तरीके में निम्न 4-H+M के बारे में भी सोचें। दरअसल हम अपने बच्चे के ज़रिए ये संदेश सारे पैरेन्ट्स को देना चाहते हैं। 4-H+M फॉर्मूला क्या है, ये जानते हैं...

पहला H- हैप्पीनेस, जो भी करें खुश रहें

बच्चे जो भी कार्य करें, उसमें खुश रहें। भले वे कम कमायें, महंगी गाड़ियां न हों तो भी चलेगा, लेकिन जो भी वह करें, उसे करते समय उनके चेहरे पर रौनक बनी रहनी चाहिए। उनको कार्य में संतुष्टि का अनुभव होना चाहिए। यदि आप अपने कार्य से बेइंतहा प्यार करेंगे तो उसमें टॉप पर पहुंचना निश्चित है। हम भी हर क्षेत्र में सफल तो नहीं हो सकते ना! तो हमारे बच्चे भी जो करें उसको मन से करें, उसको करते हुए

दूसरा H- हम्बल, विनम्र रहें

हम चाहते हैं कि बच्चे विनम्र हों। आज की दुनिया में कोई किसी चीज़ में नाम कमा लेता है तो लोग उसका ऑटोग्राफ लेते हैं, कई सलाम करते हैं, साथ में फोटो खिंचवाते हैं, उपरान्त लोग भी उनका बेहद आदर करते हैं। लेकिन इसमें हमारा व्यक्तित्व तब निखरता है जब जो सम्मान हमें लोगों से मिला वो औरों को भी हमसे मिलना चाहिए। इससे हमारा अहम् कभी ऊपर नहीं होगा और हम हमेशा हम्बल रह पायेंगे। उपलब्धि पाकर भी हमें ये सोचना है कि ये सिर्फ परमात्मा की कृपा है और उस कृपा को मुझे उसे ही लौटाना है। इससे हम कभी भी अंहकारी नहीं होंगे।

तीसरा H- ऑनेस्टी विद द सेल्फ

हम चाहते हैं कि बच्चे सदैव अपने प्रति ईमानदार रहें और अपनी ईमानदारी के लिए कभी उन्हें झिझक न आए। वे सहजता से, सरलता से अंदर की बात कहने की हिम्मत रखें। जो वादा खुद से कर लिया वो ना तोड़ें। कोई ऐसी परिस्थिति हो कि बच्चे वादा न निभा पायें तो मुंह चुराने के बजाए, झूठ या बहाना बनाने के बजाए सामने बैठकर साहस से स्वीकार करें कि मुझसे ये गलती हुई है। उनमें वो साहस पैदा करने के लिए हमें उनके इनर सेल्फ को मजबूत बनाना है। बार-बार उनको ड्यूटी अपने प्रति, समाज के प्रति, देश के प्रति जिम्मेवारियों का एहसास कराते रहना है।

चौथा H- हाई थिंकिंग, बड़ी सोच

हम चाहेंगे कि हमारे बच्चे बड़ा सोचें। ऐसा नहीं कि एक छोटा-सा मकान मिल जाए या अपने परिवार का पेट पाल लूं या अपने छोटे से परिवार से खुश रहूं, नहीं, आपको अपने देश को भी कुछ देना है। उसके लिए अच्छी किताबें पढ़ें, बेहतर लोगों के संग में रहें। आपको बड़ा बनने की ज़रूरत नहीं। अपनी लाइन बड़ी करें जिससे कि दूसरे की लाइन खुद ब खुद छोटी हो जाए। अपनी उपलब्धियों से दूसरों को हराएं, ना कि बेईमानी करके या किसी और का अधिकार लेकर। जब लोग उनकी तरफ देखें तो विश्वसनीयता और भरोसे के साथ देखें।

M- मेडिटेशन

हम चाहेंगे कि हमारे बच्चे मेडिटेशन को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। मेडिटेशन माना अपने आप को अवकाश देना। जिससे हमारे भीतर में कुदरत प्रदत्त जो शक्तियां, योग्यताएं हैं, उन्हें देखें, जाँचें, समझें। क्योंकि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों के विचार ऊंचे हों अर्थात् स्व के साथ दूसरों के कल्याण के लिए हों। 'मेडिटेशन माना टू हील योरसेल्फ'। भीतरी शक्तियों से रूबरू होना और उसपर अपने विश्वास को और पुष्ट करना। जिसे अपनी काबिलियत पर विश्वास है, वो निश्चित ही कामयाब भी होगा। मेडिटेशन एक ऐसा टूल है जो हर पल हमें आत्मविश्वास से भरपूर रखता है। तो हम ये चाहेंगे कि हमारे बच्चे भीतरी ऊर्जा से सरोबार हों। मेडिटेशन चारों H को मैगनेट की तरह अपनी तरफ आकर्षित कर जोड़े रखता है और उन्हें पुष्ट और प्रखर बनाए रखता है। तो इसके लिए माता-पिता को चाहिए कि एकांत में खूब समय निकालें और संयुक्त रूप से पालन पोषण की योजना बनाएं। उस योजना को लिखें, उसमें अपना सौ प्रतिशत डालें। और फायदा होगा या नहीं इसकी चिंता नहीं करें। ऐसा करने पर हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमें भविष्य में यह मलाल नहीं होगा कि हम जितनी मेहनत कर सकते थे उतनी नहीं की।

येवला-महा.। येवला-मानुसकी फाउंडेशन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अनु को समाजभूषण सम्मान से सम्मानित करते हुए महाराष्ट्र राज्य के कैबिनेट मंत्री येवला तालुका के विधायक छगनराबजी भुजबलसाहब।

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर राजयोगी ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा के निर्देशन में रोटरी इंटरनेशनल ग्लोबल हॉस्पिटल ब्लड बैंक माउंट आबू और ट्रोमा सेंटर ब्लड बैंक,आबू रोड के संयुक्त तत्वावधान में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन परिसर के ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित भव्य समारोह कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा व राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, ग्लोबल हॉस्पिटल के निर्देशक राजयोगी ब्र.कु. प्रताप मिड्ढा, मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल, पैथोलॉजिस्ट डॉ. ज्योति मिश्रा, डॉ. अनिल भंसाली, ब्र.कु. विशाल, ब्र.कु. धर्मेन्द्र तथा अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

विदिशा-गुलाबगंज(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में समाजसेविका श्रीमती राजकुमारी को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा। साथ हैं ब्र.कु. रुक्मणी, ब्र.कु. नन्दनी एवं ब्र.कु. अनु।

अव्यक्त मुरली 30-11-2002 (पहेली-22)2024-25

ऊपर से नीचे

1. जो दिन लक्षणहीन या विशेष आत्मायें हैं। वहीं आत्माएं भक्तों के लिए ___ के मणकों के रूप में सिमरी जाती हैं।(2)
2. जो गवर्मेन्ट समझती है कुमार (यूथ) अर्थात् झगड़ा करने वाले, डरती है कुमारों से। ऐसे डरने वाली गवर्मेन्ट हर ब्रह्माकुमार का शान्तिदूत का टाइटल से स्वागत करे, तब है कुमारों की ___।(3)
3. आध्यात्मिक ___ में भी दिन लक्षण का बहुत महत्व है। जो दिन लक्षणहीन हैं वही आत्मायें विश्व में विशेष गाई जाती हैं।(3)
4. [illegible] समय साथ के विशेष दो ब्रह्म बच्चों का ___ होते हैं। एक तरफ संकल्प, दूसरा - मैं ही राइट हूँ।(3)
5. अब हमारी दिल्ली-जनी है। एक ही शब्द रिपीट सदा याद रहे। इसके लिए बहुत सहज ___ है-हर संकल्प, बोल और कर्म को ब्रह्मा बाप से रीयल (मिलन) करो।(3)
9. ___ समय स्वराज्य अधिकारी बने हो, हर एक ब्राह्मण आत्मा का स्वराज्य गले का हार है। ऐसे स्वयं को ऐसा स्वराज्य अधिकारी अनुभव करते हो?(4)
10. जितना संगम का समय ज्यादा में ज्यादा लक्षणहीन होंगे उतना ही आधाकल्प सूर्यवंश की ___ में और चन्द्रवंश में भी सूर्यवंश के राज्य चलाने में होंगे।(4)
11. बापदादा ___ के प्रमाण अब यही चाहते हैं कि एक शब्द सदा स्मृति में रहे-बाप से हुई सर्व प्राप्तियों का, स्नेह का, सहयोग का रिटर्न करना है। रिटर्न करना अर्थात् समान बनना।(3)
14. [illegible](2)
15. बाप का संकल्प क्या रहा? बाप का बोल क्या रहा? बाप का कर्म क्या रहा? इसको ही कहा जाता है फालो ___।(3)
16. जैसे ब्रह्मा बाप सदा निमित्त और निर्माण रहे, ऐसे निमित्त भाव और निर्माण भाव। और बोल में सदा ___ भाषी, मधुर भाषी।(3)
18. तीव्र पुरुषार्थी सदा दृढ़ निश्चय होने के कारण यही सोचता है- हर कार्य हिम्मत और बाप की ___ से सफल हुआ ही पड़ा है।(3)
19. जो परमात्म लक्षण हीन होगा उसकी निशानी-प्रत्यक्ष चलन और चेहरे से सदा डबल लाइट होगा। अपने मन में, सहज बोझ जो सिर पर होता है लेकिन सूक्ष्म बोझ मन में होता है। तो मन में कोई बोझ नहीं होगा। ___ है बोझ, बेफिक्र है डबल लाइट।(3)
22. जैसे ___ बुझाने वाले कहीं भी आग होगी तो आग बुझायेंगे ना। तो शान्तिदूत का कार्य ही है अशान्ति को शान्ति में बदलना।(2)

बायें से दायें

1. हर वर्ष एक दो से सेवा भी करते हैं, अच्छा है। सेवा नहीं करेंगा, सेवा फल करो। हर वर्ष की रिजल्ट, जो भी मेला के बाद आईपी और वी.आईपी सम्पर्क में आते हैं, अभी ___ नहीं लाये हैं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं।(3)
5. सब अच्छा सहयोग दे रहे हैं और देते रहेंगे, स्थापना के ___ साथी हो।(2)
6. स्थानी ज्या है कि हम परमात्म दिल लक्षणहीन भी हैं। ___ जीवन में, उस में भी विशेष दिन ही महान गाई जाती है। दिन कम गाते तो जीवन समाप्त।(3)
7. भृकुटी का लक्षण तो सर्व आत्माओं की है लेकिन परमात्म ___ सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के सिवाय किसी को प्राप्त नहीं है। यह ___ लक्षण ही विश्व का लक्षण दिखाता है।(2)
8. इस विश्व विद्यालय की स्थापना भी बच्चों से हुई है। पहले बच्चे ही तो बड़े हुए हैं ना। बहुत अच्छा। बच्चे हैं बापदादा के सिर के ताज। तो सदा सफल मार्ग में ___ सेवा चलाना।(5)
12. आज बापदादा ऐसे श्रेष्ठ बच्चों को देख रहे थे कि कैसे नहीं थे झूला में झूल रहे हैं। झूलते रहते और झूलते रहें? मिट्टी में तो नहीं जाओ। कभी-कभी दिल होती है क्या, मिट्टी में पांव रखने को? क्योंकि 63 ___ मिट्टी में ही पांव रखने, मिट्टी में ही खेलना।(2)
13. जो ___ तख्त नशीन होगा उसकी निशानी-प्रत्यक्ष चलन और चेहरे से सदा बेफिक्र बादशाह होगा।(4)
14. विश्व की आत्माओं का कल्याण हो जाए, दुःखियों के लिए ___ है, 21 कुल का उद्धार करने वाली, तो आधाकल्प 21 कुल हो जायेगी।(3)
17. ब्रह्मा बाप के लास्ट के तीनों शब्द ___ रहते हैं? निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी।(2)
20. यह संकल्प करो कि विनाश बाप के ___ पर ___ रहने के और कोई भी ___ नहीं उठायेगी। बस फुल स्टॉप।(3)
21. [illegible](3)
23. इन सब कुमारियों का लक्ष्य क्या है? नौकरी करनी है या विश्व सेवा करनी है? ताज ___ पर रखना है या टोकरी रखनी है? क्या रखना है?(2)
24. अगर अभी ___ पर कभी-कभी लक्षणहीन होंगे तो सूर्यवंश के सीटल फैमिली में इतना ही थोड़ा समय होंगे।(3)

21/24- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 14-11-2002)

ऊपर से नीचे: 1.स्वमान, 2.ध्यान, 3.विजय, 4.ताज, 6.निष्कामी, 7.शोभा, 10.नाटक, 11.मधुबन, 12.सीजन, 14.लाइट, 15.हार, 16.समाधान, 18.तन, 19.घर।

बायें से दायें: 1.स्वमानधारी, 3.विशेषता, 5.पवित्र, 6.निश्चय, 8.सेवा, 9.निष्फल, 11.मालिक, 13.पावन, 17.समान, 18.तट, 20.मन, 21.निराकार, 22.नशा।

कृष्ण भावना का एक दृष्टिकोण है। सभी उसको अपने हिसाब से समझने का प्रयास करते हैं। सबके जीवन में अलग-अलग अर्थ और भाव लिए कृष्ण पनपते हैं। तो कृष्ण को कृष्ण के हिसाब से समझने के लिए उनके अन्दर के गुणों को, भावों को पकड़ना और उसको शब्दों के धरातल से उठकर अनुभव के धरातल पर लाकर समझना होगा। तब उसे हम समझ पाएंगे।

इस दुनिया में देवताओं की जो फेहरिस्त है उसमें सबसे ज्यादा उत्तम, सबसे ज्यादा पूजनीय, माननीय और सबके अन्दर बसने वाला एक नाम है- वो है श्रीकृष्ण का। लेकिन एक आभा ऐसी है, एक ओज ऐसा है जिसको इतने समय तक लोग याद रखते हैं। आज भी कलियुग के दौर में भी इतनी शिद्दत के साथ उनकी पूजा होती है, उनको पहचानते हैं, उनके साथ बैठते हैं, और बात भी करते हैं।

भाव हमारे अन्दर का वातावरण बदल देते हैं। और अन्दर का वातावरण बदलते ही हमारा सूक्ष्म शरीर एक्टिव हो जाता है, सक्रिय हो जाता है। तो ये देखो कितना प्रायोगिक है, कितना प्रैक्टिकल है कि एक है अभ्यास से मैं सारी चीज़ें ठीक कर रहा हूँ, बहुत अच्छी बात है। लेकिन दूसरा है प्राकृतिक रूप से, नैचुरल तरीके से हमारे अन्दर ये सारी चीज़ें आ रही हैं। लेकिन जो श्रीकृष्ण थे, वो एक सम्पूर्ण मानव थे।

बना हुआ शरीर है और जो भी इच्छा होगी वो प्राकृतिक हो तो होगी ना! लेकिन परमात्मा कहता है कि हम सबकी इच्छाएं ही हम सबको नीचे गिराती हैं, अवगुण लाती हैं।

तो कृष्ण का सबसे पहला जो कार्य था बनने का, कोई भी इच्छा है उसका ज्ञान ही नहीं था। पूरी तरह से एक

सबको क्षमा करने का, आधार, उद्धार, सबके जीवन को अच्छा बनाने का, सबकी भावनाओं को श्रेष्ठ बनाने का, ये कार्य अगर हमारे जीवन में आना

आकर्षणमय आभा है कृष्ण

तो प्रश्न उठता है कि हम सभी उस आकर्षणमय आभा के करीब कब पहुंचेंगे? जन्माष्टमी तो सिर्फ एक त्योहार के रूप में हम सबके सामने है। लेकिन उसका मानवता के ऊपर प्रभाव और मानव मन उससे कैसे सुख पाए, उस बात को समझना अति आवश्यक है। आपको पता है कि आजकल जो रिसर्च चलता है वैज्ञानिक कहते हैं, मनोवैज्ञानिक भी कहते हैं कि हम सबके अन्दर एक भाव होता है- उदारता का, सबके लिए क्षमाशीलता का, सबके लिए अच्छा सोचने का, इतने सारे जो छोटे-छोटे भाव होते हैं तो ये

जिसमें सर्व गुण, सर्व शक्तियां मौजूद थीं लेकिन वो उसको उन्होंने नैचुरल बनाया। कैसे बनाया होगा?

इस दुनिया में जब हम कुछ पाने की चाह रखते हैं, कोई इच्छा रखते हैं तो आप देखो सारी ऊर्जा उस इच्छा को पूरा करने में लग जाती है। क्योंकि जब हम इच्छा को पूरा करेंगे तो बहुत सारी बाधाएं भी आयेंगी, उसमें स्वार्थ भी आयेगा। आपका ऊपर-नीचे करने का मन भी करेगा। जब ये सारा शुरू हो जाता है तो समझो हम मनुष्य की स्थिति में हैं, मनुष्यता की स्थिति में जी रहे हैं। क्योंकि प्रकृति से

निष्काम योगी की तरह जीवन था। और वो जीवन उन्होंने अभ्यास से नहीं, उसको समझकर बनाया। क्योंकि अभ्यास जब हम करना शुरू करते हैं किसी चीज़ का तो उसमें हमारा एफर्ट लगता है। लेकिन जैसे ही सब समझ में आता है कि हमारा शरीर यहाँ के कर्म, यहाँ की सारी चीज़ें यहीं रह जानी हैं। सिर्फ हम थोड़े दिन के लिए भूमिका निभाने आये हैं। हमारे अन्दर वो सारी बातें नैचुरल सी हो जाती हैं। जिस बात की समझ आकर्षण पैदा करती है और हमारा आभा चमकना शुरू हो जाता है। आप देखो बहुत सारे संत

महात्मा जिनको इसदुनिया की चाह नहीं है, उनके फल भी और इतना अच्छा होता है, अच्छा लगता है। क्योंकि श्रीकृष्ण ने कितना काम किया होगा! कितना सोचा होगा, कितना गहराई से सोचा होगा कि आज भी जो आकर्षण में, वो आभामंडल हम सभी को उनको पूजने के लिए विवश करता है, उनको देखने के लिए विवश करता है।

तो ऐसा कृष्ण, ऐसी कृष्ण जन्माष्टमी हर साल एक त्योहार के रूप में, एक परम्परा के रूप में हम मनाते हैं। लेकिन अगर उसको जीवन में उतारना है तो सबसे पहले सारे गुणों को जो सबसे पहला गुण, सबसे बड़ा गुण उदारता का।

शुरू हो तो वही स्थिति आप अनुभव कर पाएंगे। तो अभी श्रीकृष्ण को पूजना नहीं है, उनके जैसा बनना है। आपने अगर कृष्ण लीला देखी हो तो उसमें इन्द्र की पूजा के लिए कृष्ण स्वयं मना कर रहे हैं। वो कह रहे हैं कि बाल लीला दिखाया है तो बाल लीला का अर्थ ही है कि आप अपने चैतन्य को अच्छा बनाओ। मूर्ति पूजा करने से क्या होता है! लेकिन जब चैतन्य को हम अच्छा बनायेंगे तो ऑटोमेटिकली पूरा जीवन उसी आभा के साथ जुड़ना शुरू हो जाएगा और अब कृष्ण नज़र आने लग जाएंगे। कृष्ण के औरों के साथ पैन करेंगे। तो हम सभी उस स्थिति में नहीं जाना चाहते? जाना तो चाहते हैं लेकिन उसका सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, तो इसको समझना बहुत ज़रूरी है। नहीं तो एक त्योहार बनकर रह जाएगा।

स्वाधीनता से स्वमान का सफर

दुनिया में कहावत है कि सबसे भारी हमारा अहंकार है जिसको हम अभी तक ढो रहे हैं। और उसी के कारण हम अभी भी अधीन हैं, पराधीन हैं, स्वाधीन नहीं हैं। तो स्वाधीनता को समझने के लिए सबसे पहले अपने अहंकार के अनुभवों को छोड़ना होगा और हमें उस मुकाम को समझना होगा जहाँ हमें सुख मिले, पॉवर मिले, शक्ति मिले।

हम सभी को आज़ाद देश मिला, जिसको मिले हुए काफी समय हो गया। और उस आज़ाद देश में हम रहते हैं। बहुत सारी चीज़ों से हम बाहर के जो रूल्स और रेगुलेशन थे, नियम-कानून थे उनसे हम मुक्त हुए। हमारे अपने नियम-कानून में हम बंधे और उसी आधार से आगे हम बढ़ते रहे।

कहते हैं हमारे ऊपर कोई राज्य नहीं चला रहा, हम पूरी तरह से स्वाधीन हैं। लेकिन जब बाहर के लोगों से हमने अपने आपको छुटकारा दिला ही दिया है तो फिर भी क्या बचा है जो हमें परेशान कर रहा है। हम सभी को अगर कहीं से कुछ ठीक नहीं मिल रहा है तो हम उसका विरोध करते हैं लेकिन जब हमको अपने से कुछ ठीक न मिले तो

उस समय हम क्या करेंगे? उस समय हम किसके पास जायेंगे? कौन हमारे लिए लड़ेगा? तो ये अब सोचने का विषय हुआ कि बाहर के लोगों की बात खत्म लेकिन अब अन्दर का शत्रु, अन्दर का दुश्मन जो हमको पूरी तरह से अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए है। खुद के दुश्मन इसको कहा जाता है कि हम अपने ही संस्कारों के, जो तंग करने वाले संस्कार जिसमें कामना है, लोभ है, अहंकार है... उसमें पूरी तरह से जकड़े हुए हैं हम सभी। और उनसे छूटना मुश्किल है, ऐसा लगता है। कारण एक है कि जब कभी हम बैठके अपने बारे में सोचते हैं, तो सोचते हैं कि ऐसी कौन-सी चीज़ रह गई जो हमको बांध रही है मुक्त नहीं होने दे रही। शारीरिक तंत्र और मानसिक तंत्र

दोनों उलझा हुआ है। तो जो हमारा मन है वो इन सब बातों से बिल्कुल ही न्यारा नहीं है। इसलिए हम स्वाधीन होकर भी पराधीनता महसूस करते हैं।

अपनी फैमिली से, अपने घर से, परिवार से, सबके साथ रहते हुए भी जैसे लगता है कुछ है जो मुझे जकड़े हुए है, वो है हमारे विकार। जिनके वश होकर हम कोई कर्म करते हैं और बाद में उसका दुःख होता है। तो परमात्मा ने हम सबको मानसिक रूप से स्वाधीन होने का एक तरीका बताया और वो तरीका बताया कि अगर हम अपने आप को वो याद दिलाएं, जिससे अन्दर की जो गुलामी है वो छूट सकती है। उसे कहते हैं स्व को सम्मान देना। या स्व को मान देना, स्व को हमेशा अलर्ट

रखना, जिसको हम आत्मा कहते हैं। स्व कहते हैं उसमें स्वाधीनता है, वहाँ पर स्वमान है, स्व का सम्मान है। तो जब मैं स्व को सम्मान देना शुरू करता हूँ, स्व को मतलब आत्मा के सारे गुण- ज्ञान, पवित्रता, शांति के आधार से अपने को अलर्ट रखता हूँ तो पराधीन करने वाले शत्रु हमसे बहुत दूर रहते हैं। और हम अपने घर में अन्दर के दुश्मनों से लड़ पाते हैं।

तो जब हम ऐसा करना शुरू करेंगे तो हम सबके अन्दर का जो गुलामी का संस्कार है, जो बंधनों में हम जकड़े हुए हैं वो हम उससे धीरे-धीरे परे और पार हो जायेंगे। तो शारीरिक रूप से भी स्वतंत्र और मानसिक रूप से भी स्वतंत्र। अब असली स्वाधीनता यहाँ

पर आपको फील होगी। लगेगा कि स्व के अधीन अब सबकुछ है। आत्मा ने सबको अधीन कर लिया, सारे विकारों पर विजय प्राप्त कर ली। जब ऐसा करेंगे तो शायद सच्ची स्वतंत्रता की ओर बढ़ पाएंगे। नहीं तो अभी भी हम परतंत्र ही हैं। इसीलिए कहा जाता है कि बाहर के लोगों को जीतना तो बहुत आसान है, लेकिन अन्दर के शत्रु को जीतने के लिए बहुत मुश्किल, बहुत मुश्किल लगता है।

तो क्या हम इस स्वतंत्रता दिवस पर अपने को अन्दर से स्वतंत्र करना नहीं चाहेंगे! चाहेंगे तो, अपनी स्वाधीनता को परमात्मा के आधार से जगाओ। स्व के अधीन सारे विकारों को करो। फिर देखो सब आपके सामने नतमस्तक होकर आपसे विदाई लेंगे और चले जायेंगे।

बन्धन नहीं पूर्ण सम्बन्ध को इंगित करता है- रक्षाबंधन

कभी आप किसी कैदी को मिले हैं जाकर? अगर आप कभी जाकर मिलेंगे तो पायेंगे, जैसे लग रहा है कि इसने कोई गुनाह किया ही नहीं है। सबसे शालीन, आराम से खड़ा होकर आपसे बात करता नज़र आएगा। कारण? क्योंकि वो कैद में है। फ्री नहीं है। इसका मतलब ये हुआ कि जैसे ही हम किसी बंधन में होते हैं तो उस समय हमसे गलतियां बहुत कम होती हैं। लेकिन जैसे ही हम स्वतंत्र होते हैं तो हम गलतियों पर गलतियां करते हैं, और फिर फंसते चले जाते हैं। जैसे ही फिर कैद में आते हैं हमको सबकुछ एहसास होता है कि हमने गलती की।

वैसे ही परमात्मा भी हम सभी को बंधन से सम्बन्ध में लाना चाहते हैं। और सम्बन्ध में लाने का मात्र एक आधार है- वो है बंधन में बंधना। आप देखो, जब आप परमात्म बंधन में बंधते हैं- जहाँ पर मर्यादायें हैं, धारणायें हैं, तो आप हरेक बात से बच जाएंगे। सबने ये बंधन को, रक्षाबंधन को एक पारम्परिक रूप से मनाना शुरू किया। और मनाते हुए हमेशा ये सोचा कि ये चीज़ तो भाई-बहन का त्योहार है। नहीं, ये एक बंधन है जो गहरे सम्बन्ध की ओर हमको ले जाता है। सम्बन्ध वो जो हमको हमेशा, हर पल, हर क्षण, रक्षा की तरफ ले जाता है। हमारी रक्षा करता भी है और कराता भी है। आपको बता दूं, जब हम सभी अपने जीवन को पूरे एक फ्लैशबैक में ले जाकर देखें तो पायेंगे कि जब भी हम माता-पिता के घर में थे, जब हमारे ऊपर कड़े पहरे थे, जब हमारे ऊपर पूरी मर्यादायें थीं तो उस समय हमसे गलतियां बहुत कम होती थीं। भले उस समय हम कोसते रहते थे कि हमको फ्रीडम नहीं मिलती। लेकिन जैसे ही माता-पिता से दूर हुए तो बहुत सारी ऐसी गलतियां हुईं जो हमने कभी सोचा भी नहीं था। तो वैसे ही ये जो बाहरी दुनिया है जिसमें हर पल, हर क्षण, हम सभी कुछ न कुछ ऐसा गलत कर रहे हैं, चाहे देख रहे हैं, चाहे सुन रहे हैं, चाहे पढ़ रहे हैं, क्यों देख, सुन, पढ़ रहे हैं क्योंकि उस समय हम स्वतंत्र हैं इसलिए सारा देख, सुन रहे हैं। लेकिन अगर वही चीज़ परमात्मा के साथ जुड़ जाए, परमात्मा के डायरेक्शन, माना माता-पिता, पिता हमारा परमात्मा है और उसका जो निर्देश है, उसका जो आदेश है कि नहीं ये सारी चीज़ें तुम्हारे लिए घातक हैं, अच्छी नहीं हैं, इससे तुम नीचे गिरोगे, हमेशा नीचे बहते जाओगे तो हम शायद उसको ना देखें।

लेकिन वो निराकार परमात्मा हम सभी को इस बात को बताने के लिए बहुत सारे उदाहरण सामने रखता है, जिसमें बहुत सारे बंधनों में से उन्होंने एक ये बंधन का उदाहरण दे दिया, वो है रक्षासूत्र या रक्षाबंधन। जिसको उन्होंने पवित्रता के साथ जोड़ा, भाई-बहन के साथ जोड़ा। ये आपको भी पता है कि भाई-बहन का रिश्ता पवित्र माना जाता है। जो बहुत सारी चीज़ें पवित्रता के साथ जुड़ी हैं तो वैसे ही व्यक्ति की रक्षा हो जाती है। अब देखो, ऋषि-मुनियों को भी जब पवित्र दिखाते हैं तो दिखाते हैं कि बहुत सारी विषैली चीज़ें भी उनके ऊपर अटैक नहीं करतीं। चाहे वो सर्प हो, या फिर कोई ऐसे जंगली जानवर है, वो भी नहीं आते। कारण? पवित्रता का बल। तो इसका मतलब है, ये बंधन हमको एक बहुत सुन्दर एक तरह से कैद दे रहा है, एक तरह से हमारी रक्षा के लिए श्रीमत को कैद दे रहा है। जिससे मैं सलामत रहूंगा। जिससे मैं हमेशा खुश रहूंगा। कारण सिर्फ एक है कि ये बात हमें समझ में आ जाए। महज ये बात हमको समझ में आ जाए।

पवित्रता के इस पावन पर्व का इतिहास और उसको समझने वाले भाव दोनों बदल गए। इस बदले भाव से हम सिर्फ इसको एक त्योहार का नाम देते हैं। लेकिन कभी उसके अर्थ और भावार्थ के अनुरूप अपने को नहीं ढालते। तो इस बार क्या हम इसको दूसरी तरह से समझना चाहेंगे?

तो आपको ये जो पर्व है इस पर्व का सम्पूर्ण अर्थ समझ में आ जाएगा कि ये पर्व हमें उस बन्धन में बांधता है जो हमारे लिए हमेशा उपस्थित है। जैसे आपने लौकिक माता-पिता का नहीं सुना तो हम परेशान हुए। लेकिन अगर पारलौकिक माता-पिता का नहीं सुनेंगे तो पूरे जीवनभर परेशान होंगे, कई जन्मों तक परेशान होंगे। इसीलिए इस सूत्र को बांधने के बाद हम सभी हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाएंगे। और ये सुरक्षा कवच एक दिन के लिए नहीं, कई जन्मों के लिए है, जो आज है वो हमेशा कायम रहेगा। तो इस रक्षाबंधन पर इस बंधन में ज़रूर बंधें लेकिन अर्थ सहित।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें तो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें राजयोगी जीवन के अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है। तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

गुड़गांव-गुरुग्राम। दक्षिण स्पेन में भारतीय प्रवासियों के बच्चों और युवा साधकों के लिए भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा शुरू की 'कैटल इंडिया कुछ करवं' के तहत आयोजित प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल में ब्र.कु. सपना को मुख्य निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया गया। रामायण के महान महाकाव्य पर आधारित एक कहानी सुनाने की प्रतियोगिता में प्रतिभागी बच्चों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. सपना तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत मालनपुर औद्योगिक क्षेत्र के एस.आर.एफ.कंपनी में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्योति,मालनपुर, ब्र.कु. रेखा,गोरमी, कंपनी के कर्मचारियों के अधिकारी संतोष पाठक तथा अन्य कर्मचारीगण।

अम्बिकापुर-छ.ग.। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सांसद चिंतामणि महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विद्या एवं ब्र.कु. सरिता,धमतरी।

कठवाड़ा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में शिक्षकों के साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. रंजन दीदी, ब्र.कु. डॉ. दामिनी, ब्र.कु. पारुलबेन, ब्र.कु. मीनलबेन तथा अन्य।

धरणगांव-महा.। माली समाज मंगल कार्यालय,तलोदा में सेंट के.डी. हाई स्कूल में पढ़े 1993 में दसवीं के छात्र-छात्राओं व शिक्षकों के स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् अशोक पटेल, दोनों पाटिल और अन्य शिक्षकों ने शॉल और फूलों द्वारा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता को सम्मानित किया।

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज इनरव्हील द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत जनता मिडल स्कूल में बच्चों को नशे से बचाव के लिए ध्यान और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भाई-बहनें।

रायपुर-खरोरा(छ.ग.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रभु उपहार भवन में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

इंदौर-गोमांती विहार(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में पौधारोपण करने के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिज्ञा करते हुए ब्र.कु. सोना, ब्र.कु. प्रतिमा, ब्र.कु. नीता, उद्योगपति दीनानाथ बंसल, चार्टर्ड अकाउंटेंट मुकेश गुप्ता, ज्योतिष पुखराज व्यास तथा अन्य।

ओम गणाधि गणपतये नमः

> कहावत यह है कि हमेशा सबकी बातों को समाकर रखने वाला बहुत शक्तिशाली होता है। लेकिन उन्हीं बातों को अगर कोई कहीं कह दे तो सबकुछ बिगड़ जाता है। किन्तु, समस्यायें एक उदरशूल की तरह हैं, जो कभी भी एक छोटी-सी बात से पूरे समाज में हड़कंप सी मचा देती है। आज हर एक व्यक्ति ऐसे लम्बोदर की तलाश में है जो सबको समा ले और किसी से कुछ न कहे। क्या हम भी ऐसे विघ्नहर्ता बन सकते हैं? या इस गणेश उत्सव पर सिर्फ विघ्नहर्ता की पूजा ही करेंगे! आओ इसकी कुछ युक्ति रखते हैं।

आज गणेश को विनायक, सिद्धि विनायक, लम्बोदर, विघ्नहर्ता, एक दन्त वाला, मूषक सवार आदि-आदि नामों से जाना जाता है। ऐसे दयावन्त गणेश को हम सभी देखते आये हैं। हर साल देखते ही हैं, लेकिन वो एक मूर्ति प्रतीकात्मक रूप से हमारे सामने है। आज तक साइंस भी इस बात का समाधान नहीं ढूंढ पाई कि एक मनुष्य के शरीर का कोई अंग दूसरे मनुष्य के शरीर में शिफ्ट किया जाए तो एकदम से वो उसको स्वीकार कर ले। इसके लिए भी कितनी प्रिकॉशन्स लेनी होती हैं। लेकिन कई बार ये सफलता पा लेता है और कई बार नहीं पाता। ऐसे में किसी मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर हो, तो उसे कैसे स्वीकार करेगा! मेडिकल साइंस के पास इसका कोई जवाब नहीं है। आज हम आधुनिकता में जो रहे हैं। अपने आप को आधुनिक समाज का कहते हुए भी हमने ये स्वीकार किया है कि एक मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर आराम से स्थित हो सकता है। आज सिद्धि-विनायक के मंदिरों में इतनी शक्ति है कि वहाँ बड़े-बड़े डॉक्टर, इंजीनियर, समाज के बुद्धिजीवी लोग जाकर माथा टेकते हैं और ऐसा कहते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी हो जाती है। दुनिया में अगर किसी बच्चे के एक्स्ट्रा हाथ-पैर हो जाएं या पैदा होते ही कोई अंग बढ़ जाए तो ऑपरेशन कराने के लिए लोग भागदौड़ शुरू कर देते हैं, लेकिन चार हाथ-आठ हाथ वाले देवी देवताएं हमको स्वीकार हैं! हमें लगता है कि वो मूर्ति है इसलिए शायद लोगों ने इसे स्वीकार किया हुआ है। अगर वो भी जीवंत होते तो उसको स्वीकार करना हमें मुश्किल होता। मानव की मनोदशा आज इतनी विक्षिप्त है कि मान्यताओं और परम्पराओं को लेकर ही आज मनुष्य आगे बढ़ रहा है। जहाँ वो देख रहा है कि थोड़ा भी हमें कुछ मिल रहा है, थोड़ी-सी प्राप्ति हो रही है, वो उस देवता को या मंदिर को फटाफट स्वीकार करके वहाँ पहुंच जाता है। सभी के संकल्पों का बल उसे वहाँ पर प्राप्ति कराता है, ना कि उस मूर्ति के अंदर ऐसी कोई ताकत है।

गणेश को देवताओं में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। उसको श्रेष्ठ मानने का आधार क्या हो सकता है? क्योंकि जब मनुष्य इतना विक्षिप्त है, उसको समझ में कुछ नहीं आ रहा है, ऐसे में ऋषि-मुनि तपस्वियों ने सबसे समझदार मनुष्यों के बाद कोई प्राणी आता है तो वो है हाथी, तो उन्होंने हाथी के सिर को मनुष्य के धड़ पर रखा और एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनाने की प्रेरणा ली।

मनुष्य जब कभी भी गणेश के चित्र के सामने जाता है तो उसको कभी भी एक मानव का दर्शन नहीं होता, उसमें एक जानवर है और दूसरा एक मनुष्य है। तो लोग दर्शन तो सबसे पहले हाथी का ही करते हैं। इसका प्रतीकात्मक बनने के पीछे एक रहस्य है। हाथी बहुत सतर्क होता है, सूंड लम्बी होती है जिससे वो पहले से ही हरेक चीज को फूंक-फूंक के परख लेता है कि ये चीज ठीक है या नहीं है। तो ये सतर्कता का प्रतीक है। मनुष्य को भी दूर से ही हरेक चीज को परखकर चलना चाहिए। इसके अलावा हाथी के कान बहुत बड़े-बड़े होते हैं जिसका अर्थ है कि कोई भी व्यर्थ की बातों को ज्यादा नहीं सुनना, उसे उड़ा देना, समर्थ बातों का ही सेवन करना।

हाथी की आँखें छोटी दिखाई जाती हैं, उसका अर्थ है स्वयं को देखना या सबको महान देखना क्योंकि हाथी की आँखों में सिलिन्ड्रिकल लेंस होते हैं, जिससे वो सभी को डबल देखता है और इस कारण किसी पर अटैक नहीं करता। इसलिए हम मनुष्य आत्माओं को भी सभी को बड़ा देखना है, महान देखना है।

हाथी का पेट बहुत बड़ा होता है। पेट बड़ा होना सुख की निशानी है और सुख वही प्राप्त कर सकता है जो सबकी बातों को समा ले, स्वीकार कर ले। हमेशा मोदक खाने का अर्थ है कि निरंतर मुख से मिठास ही बाहर आये। उनकी सवारी चूहा दिखाया। अब इतना बड़ा गणेश और इतना सा चूहा, अगर सचमुच गणेश जी उसपर बैठ जायें तो उसका क्या हाल होगा! चूहा माया की निशानी है, जो पहले फूंकता है फिर काटता है और मनुष्य को पता भी नहीं चलता। ऐसे ही जब कोई बात छोटी-सी माया की हमारे पास आती है, तो वो हमको लगती बहुत छोटी है, लेकिन वो धीरे-धीरे हमारे साथ-जुड़ते-जुड़ते बहुत बड़ी हो जाती है अगर उसपर ध्यान नहीं दिया जाये तो। इसलिए माया रूपी चूहे पर हमेशा सतर्क रहना या उसको अपने वश में रखना, उसकी सवारी करना है, अगर हमने आँख-नाक, कान-मुँह, इन सबको अपने वश में रख लिया तो व्यर्थ तो वैसे ही समाप्त हो गया। ये मूल रूप से हमारी पंच इंद्रियां हैं जिनको जो जितना वश में रखता है उतनी समस्या नहीं आती, उतने विघ्न नहीं आते। इसलिए, इस गणेश चतुर्थी पर हम सभी इसके मूल अर्थ को समझ करके अपनी इंद्रियों पर संयम रखें और स्वयं अपने आप को निर्विघ्न बनाकर, घर को भी निर्विघ्न बनाकर साथ में समाज के हर एक व्यक्ति को निर्विघ्न बनाकर पूरे विश्व में निर्विघ्न स्थिति ला दें। यही गणेश चतुर्थी के साथ सच्चा न्याय होगा।

सतना-म.प्र.। जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संचालित जिला महिला मंच कार्यक्रम की तरफ से दसवीं एवं बारहवीं में फर्स्ट आने वाले विद्यार्थियों के सम्मान समारोह कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजुलता, कृष्णाली पैटेल, प्रतिभा मराठे, भाग्यश्री चौरसी, रेशमाई तथा अन्य।

रतलाम-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ भाग्योदय भवन में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा, नरेश सकलेचा, रिटायर्ड वरिष्ठ सहायक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया एवं जिला पर्यावरण प्रमुख अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत रतलाम, अनिल पांडे, नगर निगम उद्यान प्रभारी, अनिल धाकड़, नगर निगम उद्यान सहायक प्रभारी, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, इप्का लैबोरेट्री रिटायर्ड जी.एम. तथा अन्य भाई-बहनें।

छतरपुर-म.प्र.। मध्यप्रदेश शासन खेल विभाग की 'माँ तुझे प्रणाम' योजना के अंतर्गत चयनित युवाओं का दल प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करते हुए छतरपुर पहुँचने पर युवाओं के लिए विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आध्यात्मिक वार्तालाप के उपरांत पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारी बहनें साथ हैं उज्जैन संभाग के सभी जिलों से शामिल हुए खेल अधिकारी व खिलाड़ी।

नागठाणे-सतारा(महा.)। राष्ट्रीय छात्र सेना बटालियन 22 महाराष्ट्र के सातारा जिले में आयोजित 'मेडिटेशन तथा मनोबल' कार्यक्रम में मार्गदर्शन करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा, कर्नल सजनाना साहेब, सुभेदार तानाजी शिंदे, सुभेदार मेजर 22 महाराष्ट्र बटालियन एनसीसी तथा अन्य।

पूर्णा-परभणी(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कृषि भूषण सजनीव एंड गंगाधर पाठक शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को योग के प्रति मार्गदर्शन करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रणिता।

आत्मा की शक्ति नष्ट होती नकारात्मक व व्यर्थ विचारों से

रायपुर छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में आयोजित '7 दिवसीय योग महोत्सव' का सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ के पश्चात् छत्तीसगढ़ योग-आयोग के अध्यक्ष रूप नारायण सिन्हा ने कहा कि योग- जीवन जीने की कला व मन को शान्त रखने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। हमारी भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ और गौरवमयी है। यह सबको जोड़ने वाली है। पुलिस महानिदेशक अरुण देव गौतम ने कहा कि राजयोग में आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ते हैं तो शरीर और प्रकृति दोनों को फायदा मिलता है। पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सच्चिदानन्द शुक्ला ने कहा कि प्रधानमंत्री की सलाह मानकर संयुक्त राष्ट्र ने पूरे वर्ष का 21 जून का दिन सबसे बड़ा होता है इसलिए इस दिन को योग दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन ने बताया कि योग शब्द का अर्थ होता है जोड़ना। अध्यात्म के सन्दर्भ में आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ना ही सच्चा योग है। सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक हीरालाल, भारतीय योग संस्थान के अध्यक्ष मुकेश सोनी और वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. चन्द्रकला ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर ब्र.कु. सविता ने सभी अतिथियों को शॉल और श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया, सभा में उपस्थित लोगों को राजयोग का व्यावहारिक अभ्यास भी कराया।

समाज के नवनिर्माण का मूल मंत्र- आध्यात्मिक सशक्तिकरण

चार दिवसीय महिला सशक्तिकरण सम्मेलन का सफल आयोजन

माउंट आबू (ज्ञान सरोवर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर परिसर में आयोजित 'राजयोग शिविर एवं राष्ट्रीय महिला सम्मेलन' के उद्घाटन सत्र में श्रीमती कृष्णा गौर, राज्यमंत्री(स्वतन्त्र प्रभार) पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग,मध्यप्रदेश ने कहा कि महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण का विषय संवाद का नहीं समाज के नवनिर्माण का मूल मंत्र है। यह सांस्कृतिक एवं आत्मिक जागरण का आह्वान है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सच्चा सशक्तिकरण बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक होता है। भरतपुर की सबसे कम उम्र की सांसद संजना जाटव ने कहा कि महिला दुर्गा का रूप है। उसके अंदर धैर्यता, सहनशीलता का गुण है जिससे कठिन परिश्रम कर वह परिवार, समाज और देश की सेवा करती है। भाजपा की महिला मोर्चा की राष्ट्रीय सचिव श्रीमती दीप्ति रावत भारद्वाज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ तथा भाजपा पार्टी के कार्यों में समानता है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महिला सशक्तिकरण का कार्य अत्यंत सराहनीय है। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी ने कहा कि महिला संस्कृति की संवाहक है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही जीवन की समस्या का समाधान है। 'अंतरयोग फाउंडेशन' के संस्थापक आचार्य उपेन्द्र,नवी मुंबई ने आरोग्य सम्पन्न भारत बनाने की बात कही। महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं लेकिन अब बात है आध्यात्मिक सशक्तिकरण की। समाज में फैले हुए विषय विकारों से मुक्ति दिलाने के लिए चंद बहनों ने अपना जीवन त्याग, तपस्या, सेवा द्वारा जगत माता का रूप लिया। मानव जीवन का सुधार आध्यात्मिकता द्वारा ही संभव है। राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, वाशी,नवी मुंबई ने सभी प्रतिनिधियों को राजयोग की अनुभूति करवाकर गहरी शान्ति की अनुभूति कराई। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। सम्मेलन में डायलॉग व खुले सत्र का आयोजन किया गया।

दीप प्रज्वलित करते हुए महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, श्रीमती कृष्णा गौर, राज्यमंत्री स्वतन्त्र प्रभार,पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग,मध्यप्रदेश, सांसद संजना जाटव, भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय सचिव श्रीमती दीप्ति रावत भारद्वाज, अंतरयोग फाउंडेशन के संस्थापक आचार्य उपेन्द्र,नवी मुंबई, महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. शीला,वाशी,नवी मुंबई, ब्र.कु. शारदा दीदी,ग्रेटर नोएडा,दिल्ली तथा अन्य।

श्रीनगर से वैश्विक संस्कृति-प्रेम-शान्ति-सद्भावना अभियान का शुभारम्भ

श्रीनगर उत्तराखंड। कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ के दादी मनोहर इंद्रा राजयोग भवन श्रीनगर,उत्तराखंड में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर और भव्य उद्घाटन समारोह का सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कला एवं संस्कृति प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी,अहमदाबाद ने कहा कि भारतीय प्राचीन संस्कृति और सभ्यता प्रति दिव्य जागृति फैलाने के लिए, देश के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों एवं संस्थानों के साथ ही कम्युनिटी में जाकर अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि आत्म-चिंतन, आत्म-सम्मान और आत्म-प्रेम बढ़ाने से स्वतः ही दूसरों को हमसे शान्ति, प्रेम और शक्ति की अनुभूति होती रहेगी। विधायक भरत सिंह चौधरी,रुद्रप्रयाग ने कहा कि राजयोग ही वह मार्ग है जिससे हमें सुख-दुःख, लाभ-हानि में एक समान रहना सिखाता है। ब्र.कु. प्रेम दीदी,नेशनल कोऑर्डिनेटर कला एवं संस्कृति प्रभाग एवं सबजोन इंचार्ज,करनाल ने बताया कि यह

अभियान वर्तमान में 14 राज्यों में चल रहा है जिसका 2026 में राष्ट्रपति भवन में भव्य समापन समारोह रखा जाएगा। ब्र.कु. राधेश्याम गर्ग,चंडीगढ़,मैनेजिंग डायरेक्टर सोनालिका प्रिंट्स ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाया जिसमें मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड में चल रहे चार धाम यात्रा के दौरान शानदार अभियान के द्वारा अलख जगा कर चार चांद लग गए हैं। उन्होंने समस्त ब्रह्माकुमारीज़ परिवार को कार्यक्रम की सफलता हेतु अपनी बधाई दी। विधायक विनोद कंडारी,देवप्रयाग ने इस आयोजन को समाज हित में प्रेरणादायक बताया और कार्यक्रम में निमंत्रण देने पर संस्था का आभार व्यक्त किया। श्याम वीर सैनी,राज्य मंत्री,उत्तराखंड सरकार ने कहा कि भारत युवा देश है और युवा हर देश की ताकत होते हैं किंतु हमें इन्हें नशे की बुरी आदत से बचाना होगा, जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का नशा मुक्त उत्तराखंड अभियान बहुत ही कारगर साबित होगा। राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत पंडित हेमंत गुरु महाराज की सम्पूर्ण रामायण पर आधारित कथक नृत्य प्रस्तुति ने लोगों को मंत्र मुग्ध किया। प्रसिद्ध रंगकर्मी विमल बहुगुणा, नाट्याचार्य अंकित पांडे,पिथौरागढ़, तबला वादक आयुष सामंत, ब्र.कु. पुनीत मेहता,हिमाचल प्रदेश, गीतकार ब्र.कु. सतीश व मिमिक्री आर्टिस्ट ब्र.कु. नितिन,माउंट आबू आदि ने भी अपनी कलाओं से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। ब्र.कु. सुनैना,ओ.आर.सी., ब्र.कु. हार्दिक ने ईश्वरीय सेवा करने का रचनात्मक प्रशिक्षण दिया। ब्र.कु. पूनम दीदी,नेशनल कोऑर्डिनेटर कला एवं संस्कृति विभाग ने सभी के प्रति प्रेम, शान्ति और सद्भावना रखने की प्रतिज्ञा करवाई। ब्र.कु. कृष्ण,असीम द्वारा सभी उपस्थित माननीय अतिथियों एवं कार्यक्रम में पहुंचे हुए भाई-बहनों का स्वागत किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका एवं कोऑर्डिनेटर समाज सेवा प्रभाग,उत्तराखंड ब्र.कु. नीलम एवं ब्र.कु. सरिता,असीम ने कुशल मंच संचालन किया।

जीवन में सद्भावना व समरसता होगी तो सुखद होगी जीवन यात्रा

माउंट आबू ज्ञान सरोवर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के जहाजरानी एवं परिवहन प्रभाग द्वारा नए क्षितिज की ओर... विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. मीरा बहन ने कहा कि जितनी बाहरी यात्रा मूल्यवान है उतनी ही आंतरिक यात्रा भी मूल्यवान है। लक्ष्य की ओर तीव्रता से बढ़ते हुए हम आसपास के मनभावन नज़ारों को नज़रअंदाज़ नहीं करें। संसार एक किताब है और हम यात्रा द्वारा ही इसके हर पन्ने को देख सकते हैं। हमारे जीवन में सद्भावना व समरसता होगी तो यात्रा भी सुखद होगी। ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि

1960 में जब मैं पहली बार यहां माउंट आबू में ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया तो मुझे पहला पाठ पढ़ाया गया था कि आप कौन हैं? मैंने स्वयं का सत्य परिचय जाना कि मैं इस देह में विराजमान चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ। मैं आत्मा यात्रा पर हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ। मैं आत्मा भिन्न-भिन्न देह रूपी वस्त्र धारण कर यात्रा कर रही हूँ। इस यात्रा में हमें कर्म के विधान को समझ रखना चाहिए कि हम स्वयं को तो सुखी रखें लेकिन साथ ही दूसरे को भी सुख मिले, ऐसा कर्म करें। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त हुई दिव्य बुद्धि, दिव्य ज्ञान द्वारा हम आनंदित होते हैं। आत्मा लाइट है तो लाइफ है, अगर आत्मा प्रकाश देह से निकल जाता तो यात्रा समाप्त हो जाती है। अंतर्जगत को जानकर ही बाहरी जगत के सत्य स्वरूप को जाना जा सकता है। परमात्म श्रीमत पर कर्म करने से भाग्य जागृत हो जाता है। केन्द्रीय सरकार में उप निदेशक संतोष कुमार,विशाखापट्टनम ने कहा कि यहां आकर मुझे पता चला कि मैं कौन हूँ। अभी तक मैं इस देह के नाम से ही खुद को पहचानता था, लेकिन यहां आकर मुझे मेरे सत्य स्वरूप का ज्ञान हुआ है। सच्ची आध्यात्मिक यात्रा का मुझे यहां अनुभव हो रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ब्रह्माकुमारीज़ में आकर मैं सर्व आंतरिक प्राप्तियां कर पाऊंगा। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मैं आध्यात्मिक यात्रा में इस परिवार से जुड़ गया हूँ। के.जी. इन्टरप्राइजेस के निदेशक राकेश कादू ने कहा कि यहां आकर बहुत अलग अलौकिक अनुभूति हो रही है। जहाजरानी मंत्रालय में वरिष्ठ प्रबंधक आशीष जावला भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कमलेश ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. प्रशान्ति ने कार्यक्रम का संचालन किया।

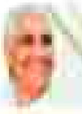

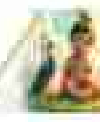

पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ — संयुक्त राष्ट्र के यूरोपीय मुख्यालय, 'पैलेस डेस नेशंस' जिनेवा में...

ब्र.कु. जयंती दीदी के साथ मनाया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पैलेस देस नेशंस के मैदान में राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, श्रीमान बागची व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनन्या बागची, डेरेन तांग हैंग शिम,महानिदेशक विश्व बौद्धिक संपदा संगठन व उनकी पत्नी क्लेयर, सुश्री सिल्वी ब्रायंड, सुश्री लौविना विजेरैत्न,मुख्य वैज्ञानिक, विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं सेबा दे कैमिनेट,महानिदेशक कार्यालय,यू.एन.ओ.जी।

400 से अधिक प्रतिभागियों ने मुख्य भवन के सामने झंडियों के बीच अपने मैट बिछाए और योग आसनों, श्वास-क्रिया और ध्यान अभ्यासों के सहज सामंजस्य में खुद को लीन कर लिया- जोकि भारत की शाश्वत बुद्धिमत्ता और आंतरिक सद्भाव की सार्वभौमिक आवश्यकता का प्रमाण है।

जिनेवा-स्विट्ज़रलैंड। 21 जून को विश्व स्तर पर मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस इस साल जिनेवा में एक ऐतिहासिक क्षण पर पहुंच गया। अपनी 11वीं वर्षगांठ मनाने के लिए जिनेवा के 'पैलेस डेस नेशंस' में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका के नेतृत्व में दो परिवर्तनकारी कार्यक्रमों का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया।

20 जून- संकटग्रस्त विश्व में भावनात्मक आत्म देखभाल

एक योगी से बातचीत कमरा 17 में, राजदूतों, राजनयिकों और संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारियों के साथ-साथ जिनेवा समुदाय के प्रमुख लोगों सहित लगभग 450 प्रतिभागियों की भीड़ राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी और पूर्व बीबीसी पत्रकार फिलिप्पा ब्लेकहम के बीच एक शक्तिशाली और आकर्षक बातचीत के लिए एकत्र हुई। इस बातचीत में इस चुनौतीपूर्ण समय में लचीलापन और मानसिक स्वास्थ्य के निर्माण में एक उपकरण के रूप में आध्यात्मिक आत्म-जागरूकता के बारे में जरूरी सवालों की खोज की गई। सत्र के दौरान तीन मेडिटेशन सत्र में मानसिक शांति की गहन अनुभूति कराई गई तथा ब्र.कु. जयंती दीदी ने वर्तमान समय आन्तरिक शांति और स्थिरता के बारे में बताया तथा

'पैलेस डेस नेशंस' में आध्यात्मिक आत्म-जागरूकता के बारे में उर्जा लाने के लिए ब्र.कु. जयंती दीदी और पूर्व बीबीसी पत्रकार फिलिप्पा ब्लेकहम के बीच शक्तिशाली बातचीत

प्रैक्टिकल में अनुभव भी कराया। भारत के राजदूत और स्थायी प्रतिनिधि महामहिम अरिंदम बागची ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें आई.एल.ओ.(अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन) की उप महानिदेशक सुश्री सेलेस्टे ड्रेक और विश्व स्वास्थ्य संगठन की सहायक महानिदेशक डॉ. युकिको नाकातानी भी शामिल थीं। दीदी ने एक घंटे तक बातचीत की और व्यावहारिक ध्यान तथा ईश्वर के साथ गहरा सम्बन्ध बनाने से सम्बन्धित कई सवालों के जवाब दिए। सभी कर्मचारियों ने ब्रह्माकुमारीज़ परिवार को रक्षाबंधन के लिए विशेष रूप से मिशन में आने का निमंत्रण दिया।

21 जून- एक परिवर्तनकारी योग उत्सव

21 जून की सुबह भी योग दिवस के एक जीवंत सत्र के साथ यह शक्तिशाली माहौल बना रहा। इस समारोह का उद्घाटन महामहिम अरिंदम बागची ने किया, साथ ही विश्व बौद्धिक संपदा संगठन के महानिदेशक श्री डेरेन तांग हैंग शिम और विश्व स्वास्थ्य संगठन की मुख्य वैज्ञानिक सुश्री सिल्वी ब्रायंड ने भी इसका उद्घाटन किया। ब्र.कु. जयंती को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था, ताकि वे एक घंटे के योग सत्र के दौरान ध्यान के अनुभवों को नेतृत्व कर सकें, जिसमें विशेष रूप से नियुक्त योग शिक्षकों ने प्रतिभागियों को विभिन्न आसनों का प्रशिक्षण दिया। मौजूद कई मिशन्स व देशों के राजदूत एवं स्थायी प्रतिनिधियों को कार्यक्रम से पहले ब्र.कु. जयंती से मिलने का अवसर मिला। भारत के स्थायी मिशन के कर्मचारियों ने इस दिन को 11 वर्षों में सबसे अच्छा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बताया, अन्य प्रतिभागियों ने इस आयोजन को 'दिव्य और परिवर्तनकारी' बताया। प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों ने 'पैलेस डेस नेशंस' में ऐसी आध्यात्मिक ऊर्जा लाने के लिए ब्र.कु. जयंती को धन्यवाद दिया।

• यह एक समग्र अनुभव था •

- प्राणायाम (श्वास व्यायाम)
- ब्र.कु. जयंती द्वारा निर्देशित प्राचीन राजयोग ध्यान तकनीक, साथ ही आर्ट ऑफ लिविंग के अभ्यासियों द्वारा प्रदर्शित क्लासिक योग आसन
- जिनेवा के अग्रणी योग और ध्यान स्कूलों द्वारा समर्थित

ब्रह्माकुमारीज़ हिसार के पीस पैलेस में आयोजित सम्मान समारोह

समाजसेवियों का भव्यता व दिव्यता के साथ मनाया सम्मान समारोह

हिसार हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ हिसार के बालसमंद रोड स्थित पीस पैलेस में आयोजित सम्मान समारोह में मंत्री रणबीर गंगवा ने ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि यह संस्था जीने की कला सिखाने का बहुत महान कार्य कर रही है कि हम सब साथ मिलकर चलें। हम सब एक हैं। नलवा के विधायक रणधीर पनिहार ने कहा कि आप आएँगे तो आपके विचार बदलेंगे। मैं तीन बार यहां आया और हर बार कुछ न कुछ नया सीखा और जिसे धारण करने का मैंने प्रयास किया। साथ ही उन्होंने कहा कि आप सभी भी यहां आया कीजिए और अपने परिवार को भी लाया कीजिए। नगर निगम के मेयर प्रवीण पोपली ने कहा कि अध्यात्म ही एकमात्र ऐसा रास्ता है जो स्थिरता है और सुख-दुःख दोनों का सामना करना तथा अपनी अवस्था को संतुलन में रखना, यह इस मार्ग से प्राप्त होता है जिससे आप जीवन में अपनी उत्कृष्टता प्राप्त कर लेते हैं। ब्र.कु. ई.वी. गिरीश ने समाजसेवी भाई-बहनों से कहा कि हम असहाय बच्चे को जीवन के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए तन, मन, धन का सहयोग तो देते हैं, पर किस दिशा में जाना है यह भी यदि बताएं तो आज छोटे-छोटे बच्चे जो सुसाइड जैसी मानसिक कमजोरी का शिकार हैं, उन्हें बचा सकते हैं। ब्र.कु. धीरेन्द्र ने ब्रह्माकुमारीज़ समाज सेवा प्रभाग की सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सेवा वही करता है जिसके हृदय में दया भाव होता है, करुणा होती है, एक-दूसरे को देने की भावना होती है। इस अवसर पर मुख्य रूप से स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमेश दीदी ने कहा कि स्वर्णिम भारत तब आयेगा जब हमारी लाइफ गोल्डन होगी। ब्र.कु. अनीता, डॉ. संदीप सूरी, सोमप्रकाश, डॉ. बीबी बांगा, ब्र.कु. सावित्री,आदमपुर व जितेन्द्र मलिक आदि मौजूद रहे। समारोह में स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली 100 संस्थाओं की 500 से अधिक महान विभूतियों को सम्मानित किया गया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. महेश ने किया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th July, 2025
स्वामी - आर.ई.आर.एस. प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर ... द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-1, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org